प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-509
उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का अधिगम

ब्लॉक-1
एक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान की समझ

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सीतांशु एस. जेना
(अध्यक्ष)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री बी. के. त्रिपाठी
आईएएस, प्रधान सचिव, मासवि
झारखंड सरकार, रांची

प्रो. ए. के. शर्मा
भूतपूर्व निदेषक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद
नई दिल्ली

प्रो. एस.वी.एस. चौधरी
भूतपूर्व उपाध्यक्ष
रा.अ.शि.प. नई दिल्ली

प्रो. सी.बी. शर्मा
शिक्षा विद्यापीठ,
इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

प्रो. एस. सी. अगरकर
प्रो. होमी भाभा विज्ञान षिक्षा केन्द्र, मुम्बई

प्रो. सी.एस. नागराजु
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के. दोराईसामी
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एवं विस्तार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

डा. बी. फलाचन्द्र
भूतपूर्व अनुदेशन विभागाध्यक्ष
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के.के. वशिष्ठ
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रा. शि. विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रो. वसुधा कामठ,
कुलपति,
एस.एन.डी.टी.,
महिला वि.वि. मुंबई

डा. हुमा मसूद
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनस्को
नई दिल्ली

प्रो. पवन सुधीर
विभागाध्यक्ष, कला एवं सौंदर्य विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्री बिनय पटनायक
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, रांची

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ सलाहकार, (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डा.कंचन बाला काचरू
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संपादक

प्रो. एस. सी. पांडा एवं डॉ. कंचन बाला काचरू
षिक्षा विभाग, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान

पाठ लेखक

डॉ. आशा के.वी.डी. कामत
आर.आई.ई. मैसूर

डॉ. नित्यानंद प्रधान
रवनशा विष्वविद्यालय
कटक, उड़ीसा

डॉ. प्रबोध कुमार पांडा
बीजेबी स्वायत्त कॉलेज,
उड़िसा भुवनेष्वर

डॉ. टी.के. बसंनतिया
ऐसोसिऐट प्रोफेसर
असम विष्वविद्यालय, सिलचर

डॉ. शरत राउत
ऐसोसिएट प्रोफेसर
रवनषा विष्वविद्यालय, कटक उड़िसा

डॉ. सुखविन्दर
एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

पाठय वस्तु संपादक

प्रो. एन. के. दास,
प्रोफेसर,
षिक्षा विद्यापीठ, इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

अनुवादक

डा. अनिल कुमार तेवतिया
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

श्रीमति अनुराधा
प्रवक्ता, डायट,
कडकडडुमा, दिल्ली

डा. सत्यवीर सिंह
प्रधानाचार्य
एस. एन. आई. कॉलिज, पिलाना, बागपत (उ.प्र.)

डा. वीरेन्द्र सिंह
ऐसोसिएट प्रोफेसर, डी. जे. पी. जी. कालेज, बड़ौत
बागपत(उ.प्र.)

डा. सतनाम सिंह
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

डा. एम. एम. राय
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

विषय वस्तु लेखक

प्रो. एस. सी. पांडा एवं डॉ. कंचन बाला काचरू
षिक्षा विभाग, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ परामर्षदाता (अध्यापक षिक्षा),
शैक्षिक विभाग,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. कंचन बाला काचरू
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

आवरण संकल्पना एवं रूपांकन

श्री डी.एन. उप्रेती
प्रकाशन अधिकारी, मुद्रण,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

धर्मानन्द जोशी
कार्यकारी सहायक, मुद्रण
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

टाईपसैटिंग

मैसर्स शिवम ग्राफिक्स
रानी बाग, 431, ऋषि नगर
दिल्ली–110034

लिपिकीय सहयोग

सुश्री सुषमा, कनिष्क सहायक, शैक्षिक,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

अध्यक्ष का संदेश .....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्ययन केंद्रों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्त्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से केंद्रिक गुणवत्ता-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपागम उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का वितरण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुखाभिमुख शिक्षण से युग्मित, सूचना एवं संचार तकनीकि, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूरित होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकरणों के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रशिक्षित अंत:सेवी शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण द्वि-वर्षीय उपाधि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाठ्यक्रम में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे सुखानुभूति हो रही है। मैं आपके राज्य के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक अध्यापक के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आवश्यक अपेक्षित कौशल आपको पहले ही प्रदान कर चुका है। चूंकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है अत: आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपके द्वारा अब तक संचित ज्ञान और अनुभव निश्चय ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है और एक शिक्षक के रूप में आपके नियमित कार्य को बाधित हुए बिना आपको पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए विकसित स्व-अनुदेशात्मक सामग्री आपको सेवा के लिए योग्य होने के अतिरिक्त आपकी समझ सृजित करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायक होनी चाहिए।

इस महान प्रयत्न में शुभकामनाओं सहित!

एस.एस. जेना

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

खंड प्रस्तावना

शिक्षार्थी के रूप में आप 'खण्ड एक : सामाजिक विज्ञान को एक विषय के रूप में समझना' का अध्ययन करेंगे। इस खण्ड में सामाजिक विज्ञान की प्रकृति तथा पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान का स्थान से संबंधित दो इकाईयां हैं। प्रत्येक इकाई भागों एवं उपभागों में विभाजित है।

इकाई-एक

यह इकाई आपको सामाजिक विज्ञान के उद्भव एवं अवधारणाओं से संबंधित समझ को विकसित करने में सहायता करेगी और आप सामाजिक अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान में समानताओं एवं अन्तर को समझने के योग्य हो सकेंगे। आप यह भी जान सकेंगे कि सामाजिक विज्ञान ने विभिन्न कालों जैसे पूर्व आधुनिक विश्व, आधुनिक तथा समकालीन विश्व में अपनी उन्नति का सफर किस प्रकार तय किया। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप सामाजिक विज्ञान के भारतीय परिदृश्य के बारे में चर्चा करने के योग्य हो सकेंगे तथा समाज के वर्तमान स्वरूप को समझ सकेंगे। यह इकाई आपको सामाजिक विज्ञान के अंतर विषयक परिदृश्य तथा विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अनुदेशनात्मक घटकों का वर्णन करने में सहायता करेगी।

इकाई-दो

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सामाजिक विज्ञान की पाठ्यवस्तु के उद्भव को प्रभावित करने वाले कारकों को पहचान सकेंगे। यह इकाई आपको स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सामाजिक विज्ञान की पाठ्यवस्तु के उद्भव को समझने में सशक्त बनायेगी। आप राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिकता इत्यादि पर चर्चा कर सकेंगे। आप सामाजिक विज्ञान से संबंधित विभिन्न मुद्दों जैसे लिंगभेद, जाति, आदिवासी परिदृश्य इत्यादि पर चर्चा करने में सक्षम हो सकेंगे। यह इकाई आपको राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में वर्तमान सोच तथा चलन (Pratice) का वर्णन कर पाने में सहायता प्रदान करेगी।

पाठ्यक्रम-509: मानचित्र

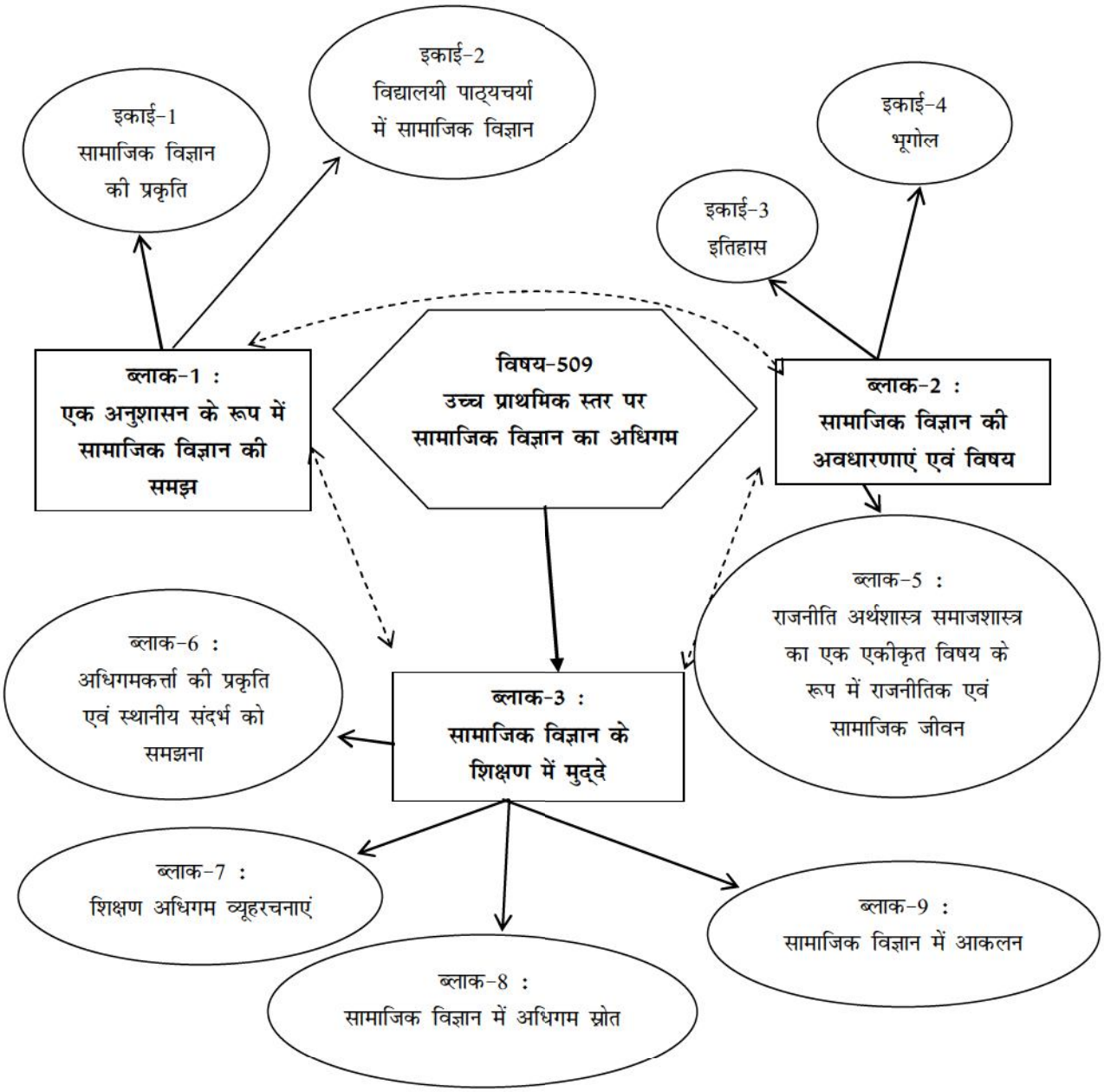

श्रेय अंक (4=3+1)

ब्लॉक	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
ब्लॉक-1 एक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान की समझ	**इकाई 1**	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	3	2	स्थानीय संदर्भों में वर्तमान सामाजिक घटनाओं एवं संबंधित चुनौतियों का अध्ययन
	इकाई 2	विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान	4	2	μ जिला/राज्य में धर्मनिरपेक्षता से संबंधित समस्याओं का अध्ययन μ स्थानीय संदर्भों में जाति एवं जेंडर से संबंधित विभेदों का अध्ययन
ब्लॉक-2 सामाजिक विज्ञान की अवधारणाएं एवं विषय	**इकाई 3**	इतिहास	5	3	विभिन्न प्रकरणों पर अवधरकों का मानचित्रण
	इकाई 4	भूगोल	5	3	किसी एक प्रकरण पर पाठयोजना विकसित करना
	इकाई 5	राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/ समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन	5	3	समाजिक विज्ञान के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पक्ष से संबंधित किसी प्रकरण पर पाठ योजना का विकास
ब्लॉक-3 सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में मुद्दे	**इकाई 6**	अधिगमकर्त्ता की प्रकृति एवं स्थानीय संदर्भ को समझना	5	3	अपने जिले की धर्मिक एवं भाषायी विविधता का अध्ययन
	इकाई 7	शिक्षण अधिगम व्यूह रचनाएं	6	4	μ अपने सहकर्मी की सामाजिक विज्ञान की कक्षा का दौरा कीजिए एवं शिक्षण के दौरान बाल केन्द्रित विशेषताओं को सूचीबद्ध करना μ किसी एक अवधरणा पर अवधरणा मानचित्रा का विकास
	इकाई 8	सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत	6	4	ग्रापफ, चार्ट तथा कार्टून बनाना तथा उनके उपयोग से प्रदशर्नी तैयार करना।
	इकाई 9	सामाजिक विज्ञान में आकलन	4	2	कक्षा–VI के विद्यार्थियों के प्रगति विवरण की व्याख्या करना
		शिक्षण	18	&	
		योग	62	28	30
		कुल योग = 62+ 28+ 30 = 120 घण्टे			

ब्लॉक-1
एक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान की समझ

इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

इकाई 2 : विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान

विषय सूची

क्रम. सं.	*पाठ का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	1
2.	इकाई 2 : विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान	31

इकाई-1 सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

टिप्पणी

संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 सामाजिक विज्ञान : उद्भव एवं अवधारणा

1.2.1 सामाजिक विज्ञान का उद्भव

1.2.2 सामाजिक विज्ञान की अवधारणा एवं सामाजिक अध्ययन की अवधारणा के साथ इसके संबंध

1.2.3 उच्च प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान

1.3 सामाजिक विज्ञान : विभिन्न कालों में

1.3.1 पूर्व-आधुनिक संसार में सामाजिक विज्ञान

1.3.2 आधुनिक एवं समकालीन संसार में सामाजिक विज्ञान

1.3.3 भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विज्ञान : विभिन्न कालों में

1.4 समाज का वर्तमान स्तर

1.4.1 वर्तमान सामाजिक घटनाएं एवं चुनौतियां

1.4.2 विभेदीकृत समाज में सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र

1.5 सामाजिक विज्ञान के घटक

1.5.1 सामाजिक विज्ञान परिवार के अन्तर्गत सुविचारित विषय

1.5.2 विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अनुदेशात्मक घटक

1.6 सामाजिक विज्ञान में अन्तर्विषयक और एकीकरण परिप्रेक्ष्य

1.6.1 सामाजिक विज्ञान में अन्तर्विषयक परिप्रेक्ष्य

1.6.2 सामाजिक विज्ञान में एकीकरण परिप्रेक्ष्य

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.10 प्रगति जांच के उत्तर

1.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

1.0 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान उस ज्ञान के क्षेत्र का निर्माण करता है जिसमें स्त्री/पुरुष के संबंधों का उनके सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के साथ अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के औपचारिक क्षेत्र के रूप में (मुख्यतया उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालयी शिक्षा स्तर पर अध्ययन का क्षेत्र) अठारहवीं शताब्दी के बाद का है और बीसवीं शताब्दी से सामाजिक विज्ञान भारत सहित संसार के लगभग सभी देशों में पाठ्यक्रम का भाग बन गया। अब आप स्मरण कीजिए, जब आप विद्यालय स्तर पर अध्ययन कर रहे थे, तब आपने भी सामाजिक विज्ञान (या सामाजिक अध्ययन) अपने विद्यालय विषय के भाग के रूप में पढ़ा होगा। इस इकाई में हम सामाजिक अध्ययन के विकास एवं अवधारणा, विभिन्न कालों में सामाजिक विज्ञान, समाज की वर्तमान स्थिति, सामाजिक विज्ञान के घटक ओर सामाजिक विज्ञान में अन्तर्विषयक एवं एकीकरण परिप्रेक्ष्य के विशेष संदर्भ के सामाजिक विज्ञान की प्रकृति से परिचित होंगे। इस इकाई में हम आपके सम्मुख सैद्धान्तिक चर्चा एवं तर्कों के द्वारा, वास्तविक उदाहरणों एवं अनुभवों के द्वारा तथा अनुसार परियोजना आधारित क्रियाकलापों के द्वारा, सामाजिक विज्ञान की प्रकृति का वर्णन करेंगे।

1.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- सामाजिक विज्ञान के विकास का वर्णन कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान की अवधारणा एवं सामाजिक अध्ययन की अवधारणा से इसके संबंधों को परिभाषित कर सकेंगे।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान की स्थिति का वर्णन कर सकेंगे।
- पूर्व-आधुनिक काल, आधुनिक काल एवं समकालीन संसार में सामाजिक विज्ञान की प्रचलित प्रकृति की व्याख्या कर सकेंगे।
- विभिन्न युगों में सामाजिक विज्ञान का भारतीय परिप्रेक्ष्य में वर्णन कर सकेंगे।
- वर्तमान सामाजिक प्रतिमानों एवं चुनौतियों के संदर्भ में सामाजिक विज्ञान अधिगम के स्थान एवं क्षेत्र को न्यायोचित सिद्ध कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान परिवार के अंतर्गत आने वाले विषयों की सूची बना सकेंगे।
- विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के प्रशिक्षण संबंधी घटकों की पहचान कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान में अंतर्विषयक एवं एकीकृत परिप्रेक्ष्य का वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

1.2 सामाजिक विज्ञानः विकास एवं अवधारणा

सामाजिक विज्ञान ज्ञान के उस क्षेत्र शाखा को समाविष्ट करता है जिसमें मुख्यरूप से मानव समाज या मानव संबंधों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान मानव जीवन के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करता है। मानव जीवन के सामाजिक व्यवहार के विभिन्न केन्द्रीय घटक हैं–आर्थिक व्यवहार, राजनीतिक व्यवहार, सांस्कृतिक एवं पारम्परिक व्यवहार, परम्पराएं एवं सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक विश्वास एवं नीतियां, समाज में अनुकरणीय मूल्य प्रतिमान आदि। सामाजिक विज्ञान का, उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालयी शिक्षा एवं विद्यालयी पाठ्यक्रम दोनों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। विश्वविद्यालय स्तर/उच्च शिक्षा पर या हाई स्कूल स्तर पर विभिन्न प्रकार के सामाजिक विज्ञान के विषय जैसे–इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं मानव विज्ञान आदि स्वतंत्र/वैकल्पिक विषय के रूप में विद्यार्थियों को पढ़ाये जाते है। विद्यालय स्तर पर या जूनियर विद्यालय स्तर पर विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषय एक एकल तथा संयुक्त विषय के अंतर्गत विद्यार्थियों को पढ़ाये जाते हैं अर्थात–सामाजिक अध्ययन (या सामाजिक विज्ञान)। अब हम सामाजिक विज्ञान के विकास एवं अवधारणा की चर्चा करेंगे।

1.2.1 सामाजिक विज्ञान का विकास

जब सामाजिक विज्ञान को 18वीं शताब्दी के दौरान अध्ययन के औपचारिक क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ और इसको उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया, विद्यालयी या जूनियर स्कूल पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने के क्रम में बीसवीं शताब्दी के दौरान 'सामाजिक अध्ययन' (जिसमें अपनी विषय वस्तु विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से ली) विकसित हुआ।

सामाजिक विज्ञान का विकास एवं वृद्धि, आधुनिकीकरण, औद्योगिकरण, नवजागरण काल, शहरीकरण, विज्ञान की वृद्धि एवं अनेकों संबंधित विकास का उप-उत्पाद है। मानव जीवन एवं रहन-सहन में अनेक परिवर्तन हुए, जिनको 18वीं शताब्दी से पहले या बाद में बड़ी मुश्किल से देखा जा सकता था। 18वीं शताब्दी के बाद से सम्पूर्ण संसार में एक जबरदस्त बदलाव आया। इटली एवं अन्य यूरोपीय देशों में नवजागरणवाद काल, फ्रांस की क्रांति 1789, 1767 से शुरू औद्योगिक क्रांति, अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम 1776, नये पूंजीवाद का विकास, प्राकृतिक विज्ञान में अपरिमित विकास आदि के द्वारा संसार में मानव समाज के लिए खुशियां एवं कठिनाईयां दोनों लायी गयी। उदाहरण–सकारात्मक पहलू पर व्यवसायिक विकास, परिवहन एवं संचार का विकास, सुख संसाधनों में गुणात्मक वृद्धि, शिक्षा एवं स्वास्थ्य में सुधार, आर्थिक दशा में विकास आदि। नकारात्मक पहलू पर सामाजिक जीवन में जटिलता का विकास, राजनीतिक अव्यवस्था, सामाजिक अव्यवस्था एवं अशांति, मानसिक संकट, लोगों के बीच में अस्वस्थ प्रतियोगिता आदि। इन सभी समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करते हुए, सामाजिक विज्ञान की उत्पत्ति हुई एवं शिक्षा/अधिगम व्यवस्था का हिस्सा बना।

सामाजिक विज्ञान की उत्पत्ति, आधुनिक समाज की विशेषताओं एवं भविष्य को समझने के प्रयास में हुआ। (Ross, 1991, P-3) मॉन्टेस्क्यू की spirit of the Laws (1748), एडम्

स्मिथ की Wealth of nations (1776), condercet की outline of an historical view of the Progress of the Human kind (1795) और जे.जी. हर्डर की Idea towards a philosophy of history (1784-91) आदि सामाजिक विज्ञान के पाठ्य वस्तु के उदाहरण थे। आधुनिक समाज एवं सामंती व प्राचीन समाज के बीच अंतर का अवलोकन करते हुए इन समाज विज्ञानियों ने सामाजिक विज्ञान की कल्पना की जो भविष्य में आधुनिक समाज का मार्गदर्शन करेगी।

औद्योगीकरण, आधुनीकीकरण, वैज्ञानिक विकास आदि के बढ़ने के कारण अनेकों सामाजिक समस्याओं का उदय हुआ जिन्होंने सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया और उसे विकलांग बना दिया। जहाँ औद्योगीकरण, और आधुनिकीकरण में जबरदस्त वृद्धि होती है तब अनेकों सामाजिक समस्याएं लाती है जैसे–बीमारी, सामाजिक संक्रमण, कर्मचारियों का शोषण आदि आधुनिक विज्ञान के द्वारा जीवाणु युद्ध, मानवता के विनाश के लिए परमाणु, अनेकों रासायनिक एवं रेडियोधर्मी भट्टी आदि की रचना करती है। बीसवीं शताब्दी में दो विश्व युद्ध (विश्व युद्ध I व विश्व युद्ध II) ने मानवता के लिए अवर्णनीय दुर्दशा लाया। इन दो युद्धों के अतिरिक्त संसार के अनेक हिस्सों में अनेकों युद्ध हुए जो वास्तव में मानवता के लिए बहुत बुरे थे। विज्ञान, शहरीकरण, एवं औद्योगिकरण आदि का इस संसार में गलत उपयोग वास्तव में मानवता के लिए एक चुनौती बन गया है। 1930 से 1940 के बीच गम्भीर रूप से आर्थिक मंदी के अनुभव ने संसार में लोगों के बीच असुरक्षा, भय, दबाव एवं अलगाव को पैदा किया। पिछले सौ वर्षों में हुए विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में त्वरित विकास ने अनेकों नयी सामाजिक समस्याओं को पैदा किया है, जबकि इसके अनेकों सकारात्मक प्रभाव भी है। एक तरफ सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, औद्योगिकरण एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव के द्वारा उत्पन्न बुराईयों को रोकने एवं उनकी जांच करने के लिए, उद्‌भव हुआ। तो दूसरी ओर आधुनिक समाज के बेहतर भविष्य के लिए मार्गदर्शक के रूप में सामाजिक विज्ञान प्रकट हुआ। और अब आजकल दर्शनशास्त्री, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, एवं अनेकों बुद्धिजीवियों ने यह महसूस किया कि सामाजिक विज्ञान किसी भी अन्य विज्ञान से यहां तक कि भौतिक विज्ञान या जीव विज्ञान से भी किसी भी सूरत में कम नहीं है। सामान्य विज्ञान ने भी यह सिद्ध किया है कि यह परमाणु के शक्तियों को संगठित करके एक विस्फोट के द्वारा संसार से संपूर्ण मानवता के विनाश करने में सक्षम है। मानव समाज को ऐसे शक्तियों के द्वारा होने वाले विनाश से बचाने के लिए सामाजिक विज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता है।

चूँकि सामाजिक विज्ञान की आधुनिक समाज में बृहत प्रासंगिकता है इसलिए वह आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण भाग बन गया है। सामाजिक विज्ञान संपूर्ण संसार में 18वीं शताब्दी के शुरू से विश्वविद्यालय/उच्च शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग है। व्यक्तिगत रूप से स्वस्थ सामाजिक और स्वतंत्र नागरिक गुणों के विकास के लिए, सामाजिक विज्ञान के महत्त्व को महसूस करते हुए, विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी के शुरू से संसार के अधिकतर देशों ने सामाजिक विज्ञान को, सामाजिक अध्ययन के नाम से या सामाजिक विज्ञान के नाम से अपने विद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है। इस इकाई के आने वाले भागों में आप विस्तृत रूप से सीखेंगे कि कैसे सामाजिक विज्ञान विद्यालय एवं उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम के घटकों की रचना करता है।

टिप्पणी

1.2.2 सामाजिक विज्ञान की अवधारणा एवं सामाजिक अध्ययन की अवधारणा के साथ इसके संबंध

अवधारणात्मक रूप से, सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन एक दूसरे से संबंधित है तथा कई पहलूओं में एक दूसरे से भिन्न है। आओ इनके बीच अवधारणात्मक संबंधों एवं विभिन्नताओं की जांच करते है।

सामाजिक विज्ञान की अवधारणा–सामाजिक विज्ञान ज्ञान का वह ढांचा है जो विस्तृत सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के स्पेक्ट्रम में मानवीय संबंधों से संबंधित है। सामाजिक विज्ञान उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम के एक महत्त्वपूर्ण घटक का निर्माण करता है। सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषय जैसे इतिहास, राजनीति विज्ञान, दर्शन शास्त्र, अर्थशास्त्र, मानव विज्ञान आदि की विश्वविद्यालय शिक्षा/उच्च विद्यालयी शिक्षा में स्वतंत्र भूमिका है। चार्ल्स वियर्ड एवं जेम्स हाई की निम्न परिभाषाओं को सामाजिक विज्ञान की अवधारणा की समान स्पष्टता के लिए जोड़ा जा सकता है।

चार्ल्स बियर्ड–सामाजिक विज्ञान, तीलियां, पत्थरों, तारों और भौतिक वस्तुओं से अलग, ज्ञान और विचार की वह शाखा है जो मानवीय संबंधों से सरोकार रखता है।

(एस.के. कोहलर, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, 1984-प्रथम संस्करण)

जेम्स हाई–सामाजिक विज्ञान अधिगम एवं अध्ययन का वह भाग है जो भौतिक एवं अ-भौतिक उद्दीपनों की समकालिक एवं आपसी क्रिया की पहचान करता है, जो सामाजिक प्रतिक्रिया का निर्माण करता है।

(डा. वाई.के. सिंह, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, 2008)

निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा सामाजिक विज्ञान की प्रकृति की विशेषता को बताया जा सकता है–

1) मानवीय क्रियाकलापों पर प्रत्यक्ष प्रभाव–सामाजिक विज्ञान ज्ञान का वो पहलू है जिसका विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में मानवीय क्रियाकलापों पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है।

2) मानव समाज का उन्नत अध्ययन–सामाजिक विज्ञान मानवीय समाज का उन्नत स्तर का अध्ययन है और सामान्यतया इसको ऊंचे शिक्षा स्तरों पर पढ़ाया जाता है।

3) मानवीय संबंधों के बारे में सत्यता की खोज करता है–सामाजिक विज्ञान मानवीय संबंधों के बारे में सत्यता की की खोज करता है अन्ततः सामाजिक उपयोग एवं ज्ञान के उन्नयन में योगदान देता है।

सामाजिक अध्ययन की अवधारणा–सामाजिक अध्ययन की अवधारणा हाल ही में उदय हुआ है। विद्यालय पाठ्यचर्या के एक भाग के रूप में विचार करने के लिए सामाजिक अध्ययन का उद्भव और विकास हुआ। विस्तृत पैमाने पर सामाजिक अध्ययन का उपयोग 1916 से अमेरिका में शुरू हुआ। भारत में इसका उपयोग गांधीजी के 'मौलिक शिक्षा, 1937' सूत्रीकरण के बाद

टिप्पणी

ही देखा जा सकता है।

सामाजिक अध्ययन एक एकल एवं संयुक्त अनुदेशात्मक क्षेत्र है जो अपनी पाठ्य वस्तु को अनेकों सामाजिक विज्ञानों जैसे–इतिहास,, भूगोल, राजीति विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि में से निकालता है। सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान के विषयों असंबंधित तरीके से नहीं जोड़ता है बल्कि जहां विद्यार्थी रहता है उस समाज/वातावरण से स्त्री/पुरुषों के संबंधों को, अध्येता के समझने की सहायता के उद्देश्य से, उन्हें अर्थपूर्ण तरीके से जोड़ता है। सामाजिक अध्ययन अधि गम का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ सामाजिक जीवन से जुड़ी हुई दक्षताओं को विकसित करना है। सामाजिक अध्ययन, समाज के व्यवहारगत पक्ष से संबंधित है। आओ सामाजिक अध्ययन पर जेम्स हाई एवं जॉन वी. मिशेल की परिभाषओं का अध्ययन करते है।

जेम्स हाई–सामान्य अर्थों में, सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान की विद्वतापूर्ण खोज का विद्यालयी दर्पण है। ऐसे आंकड़े, जिनको कि समाज वैज्ञानिक एकत्रित कर सकते है, सभी ग्रेडों में बच्चों के लिए अभिव्यक्ति के सटीक स्तर को समाकलित व सरलीकृत करते है।

(एस.के. कोच्चर, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, 1984, प्रथम संस्करण) जॉन वी. मिशेल–सामाजिक अध्ययन मनुष्य और उसके समाजिक तथा भौतिक वातावरण के साथ संबंध ों से संबंधित है, ये मानवीय संबंधो से संबंधित है। सामाजिक अध्ययन का केंद्रिय कार्य शिक्षा के केंद्रीय उद्देश्य के जैसा ही है–प्रजातांत्रिक नागरिकता का विकास।

(एस.के. कोच्चर, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, 1984, प्रथम संस्करण)

निम्नलिखित बिंदुओं को सामाजिक अध्ययन की प्रकृति के विशेषता के रूप में जाना जा सकता है–

1) सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के संदर्भ में सामाजिक अध्ययन मानवीय अध्ययन से संबंधित है।

2) विद्यार्थियों के बीच स्वस्थ सामाजिक/प्रजातांत्रिक जीवन को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय स्तर पर पढ़ाये जाने के लिए, सामाजिक अध्ययन को अनदेशात्मक संबंधी क्षेत्र के रूप में सामाजिक विज्ञान में विकसित किया गया है।

3) सामाजिक अध्ययन, वर्तमान, भूतकाल तथा भविष्य के बीच संबंध स्थापित करता है।

4) सामाजिक अध्ययन अधिकांशत मानव जीवन के समकालीन संबंधों तथा इसकी समस्याओं पर अधिक बल देता है अपेक्षाकृत मनुष्य के पिछले इतिहास के।

5) सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थी को सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण, जिसमें परिवार, समुदाय, राज्य, राष्ट्र एवं विस्तृत रूप में संपूर्ण मानवता, के साथ सामंजस्य करने के योग्य बनाना है।

6) सामाजिक अध्ययन, समाज के व्यवहारिक पक्ष संबंधित है या वास्तविक पाठ्यक्रम है।

टिप्पणी

7) सामाजिक अध्ययन इस समय वृद्धि और विकासशील अवस्था में है। यह अपने क्षेत्र को और बड़ा एवं विस्तृत करने की कोशिश कर रहा है।

8) सामाजिक अध्ययन को स्वस्थ सामाजिक जीवन से संबंधित आवश्यक दक्षताओं को विकसित करने के लिए, विद्यालय स्तर पर, मुख्य विषय के रूप में माना जाता है।

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन के बीच क्रियात्मक समानताएं एवं भिन्नताएं:

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन एक सिक्के दो पहलू है। ये एक दूसरे से अनेक तरह से संबंधित है और एक दूसरे से भिन्न है। आओ इनमें समानताएं एवं भिन्नताएं प्राप्त करते है–

समानताएं–

1) सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन दोनों ही एक ही वर्ग निक्षेप का परिणाम है।

2) दोनों एक ही विषय वस्तु के सर्वनिष्ठ निकाय को बाँटते है।

3) दोनों ही स्थितियों में केन्द्रीय बिन्दु स्त्री/पुरुष का संबंध स्त्री/पुरुष और उनके वातावरण से संबंधित है।

4) सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन दोनों में ही मानवीय संबंध उभयनिष्ठ होता है।

5) दोनों में ही मनुष्यों के विभिन्न क्रियाकलापों में व्यस्तता पर बल दिया जाता है। इसका उद्देश्य होता है उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति उनकी भावनाओं एवं विचारों के आदान प्रदान जीवन की आवश्यकताओं के निर्माण एवं उपभोग के लिए, और मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा।

आकृति 1.1 सामाजिक अध्ययन के साथ सामाजिक विज्ञान के साथ क्रियात्मक संबंधों का वर्णन।

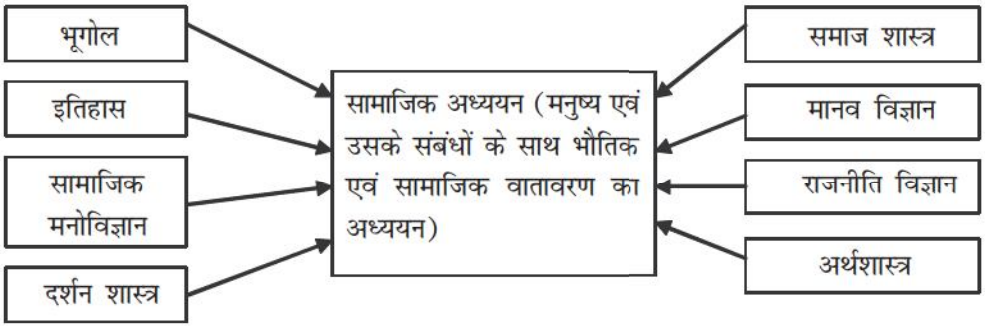

आकृति 1.1 सामाजिक अध्ययन के साथ सामाजिक विज्ञान का क्रियात्मक संबंध

स्रोत:– John Jarolimek–"प्रारम्भिक शिक्षा में सामाजिक अध्ययन", The Mac Millan Company (1959), New York.

टिप्पणी

अन्तर:

अन्तर के बिंदु	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
व्युत्पत्ति	सामाजिक विज्ञान सामाजिक अध्ययन का जन्मदाता है।	सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान का उत्पाद या परिणाम है।
संबंधों का क्षेत्र	मानवीय संबंधों के सैद्धान्तिक पहलू से संबंधित है।	मानवीय संबंधों के व्यवहारात्मक पहलू से संबंधित है।
कार्य का क्षेत्र	सामाजिक विज्ञान सामाजिक उपयोगिताओं की खोज करता है।	सामाजिक अध्ययन प्रशिक्षण संबंधी उपयोगिताओं की खोज करता है।
उपागम	सामाजिक विज्ञान एक व्यस्क उपागम प्रस्तुत करता है।	सामाजिक अध्ययन एक बाल उपागम प्रस्तुत करता है।
उपागम	सामाजिक विज्ञान का अध्ययन एक आदर्श उपागम के द्वारा होता है।	सामाजिक अध्ययन का अध्ययन एक प्रगतिवादी उपागम के द्वारा होता है।
उद्देश्य	सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य ज्ञान का अंशदान एवं बौद्धिक क्षितिज का विकास करना है।	सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य समाज की विभिन्न व्यवहारात्मक समस्याओं के समाधान के लिए ज्ञान ग्रहण करना है।
घटक	सामाजिक विज्ञान में बड़ी संख्या में विभिन्न विषय जैसे–इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र, मानव विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि शामिल है।	सामाजिक अध्ययन बड़ी संख्या में सामाजिक विज्ञान से पाठ्यवस्तु का निर्माण करता है और तीन या चार विस्तृत शीर्षकों को लेबल प्रदान करता है (जैसे–इतिहास, अर्थशास्त्र, आदि) जिससे कि उन्हें विद्यालय स्तर पर पढ़ाया जा सके।
संयोजन की प्रकृति	सामाजिक विज्ञान विभिन्न विषयों का मिश्रण है जहाँ प्रत्येक विषय अपनी एक विशेष पहचान रखता है और एक विषय को दूसरे से आसानी से अलग किया जा सकता है।	सामाजिक अध्ययन को हम मिश्रण की अपेक्षा एक ठोस संघट कह सकते है यहाँ पर इस संयोग से कुछ नया प्राप्त होता है। स्पष्ट रूप से सामाजिक अध्ययन के भागों को अलग करना बहुत कठिन है।
पाठक या पढ़ने वाले	सामाजिक विज्ञान के पाठक बहुत कम है। केवल वही जो रुचि रखने है एवं योग्य होते है वहीं सामाजिक विज्ञान का अध्ययन कर सकते है।	सामाजिक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नागरिक निर्माण से ही शुरू होता है। इसलिए यह सभी के द्वारा पढ़ा जाता है।
अध्ययन की अवस्था	सामाजिक विज्ञान मानव समाज का उन्नत अध्ययन है। यह मुख्य रूप से	सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान का सरलीकृत पहलू है जो मुख्य रूप से

टिप्पणी

	उच्च विद्यालय/विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाया जाता है।	विद्यालय या बेसिक विद्यालय स्तर पर पढ़ाया जाता है।
क्षेत्र	जब से सामाजिक विज्ञान में नये विषयों का समावेश हुआ है इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है।	सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान का एक भाग है। इसलिए यह सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा संकीर्ण है।
क्षेत्र	सामाजिक विज्ञान के प्रत्येक विषय का क्षेत्र इसके स्वयं के क्षेत्र के अंदर सीमित है। उदाहरण के लिए-अर्थशास्त्र कुछ ऐसे क्रियाकलापों से संबंधित हे जो केवल अर्थशास्त्र के क्षेत्र को छूते हैं।	सामाजिक अध्ययन मनुष्य के सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं को एक संघटित तरीके से छूता है।
जटिलता	सामाजिक विज्ञान एक सामाजिक परिदृश्य का जटिल अध्ययन है।	सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान का एक सरलीकृत पहलू है जो विद्यालय या बेसिक विद्यालय स्तर पर पढ़ाया जाता है।

1.2.3 उच्च प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान–

आज, संसार के अधिकतर देशों में सामाजिक विज्ञान को विद्यालयी पाठ्यक्रम के भाग के रूप में पाया जाता है। आओ, भारत के वर्तमान विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान की स्थिति की चर्चा करें। भारत में, निम्न प्राथमिक विद्यालयी स्तर पर (class I-V) एवं माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर (class ix-x) विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के एक विशेष संगठित प्रशिक्षण संबंधी क्षेत्र के रूप में पढ़ाया जाता है और पाठ्यक्रम का यह क्षेत्र सामाजिक अध्ययन या सामाजिक विज्ञान कहलाता है। उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय स्तर पर मुख्य रूप से तीन या चार सूचनात्मक विषय/घटक (उदाहरण-इतिहास, भूगोल आदि) सामाजिक विज्ञान या सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में सम्मिलित है। सामाजिक विज्ञान की विद्यालय स्तर के सूचनात्मक विषयों/घटकों के संबंध में विस्तृत जानकारी आपको इस इकाई के बाद के भागों में प्राप्त होगी। (भाग 1.5.2)। उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर, (कक्षा xi-xii), विभिन्न प्रकार के सामाजिक विज्ञान के विषय जैसे–राजनीति विज्ञान, मानव विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, आदि विषय एच्छिक। विशेष कोर्स के रूप में पढ़ाये जाते है।

उच्च प्राथमिक 'और', 'या' माध्यमिक स्तर पर, पुकारा जाने वाला शब्द सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन विनिमयता के अनुसार एक बड़े परिणाम के साथ उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए–(HCF (2005, P-53) ने उच्च प्राथमिक स्तर पर 'सामाजिक अध्ययन' शब्द को पाठ्यक्रम के संदर्भ में उपयोग किया है। वहीं National Position Paper–Nation focus group on teaching social sciences (2006, P-5) ने उच्च प्राथमिक अवस्था में 'सामाजिक विज्ञान' शब्द को पाठ्यक्रम के संदर्भ में उपयोग किया है। इतिहास, भूगोल एवं सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पाठ्य पुस्तक में, सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के उच्च प्राथमिक स्तर पर, ''सामाजिक विज्ञान'' शब्द का उपयोग किया गया है। शब्द (सामाजिक अध्ययन या सामाजिक

विज्ञान) कोई भी उपयोग किया जाये, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण अधिगम का केंद्र, शिक्षा के स्तर के अनुसार परिवर्तन से है, जिसकी पहले ही चर्चा की जा चुकी है। विद्यालय स्तर पर, सामाजिक अध्ययन/सामाजिक विज्ञान का अधिगम ऐसे मुद्दों पर केंद्रित होता है जो उच्च शिक्षा स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अधिगम के बिंदुओं से क्रियात्मक रूप से अलग है। उच्च प्राथमिक/प्रारम्भिक विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान अधिगम के सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित है:–

1) विद्यार्थियों को उनके भौगोलिक, सामाजिक एवं सामाजिक वातावरण से परिचित कराना।

2) विद्यार्थियों में सामाजिक तुलनात्मकता एवं सामाजिक जिम्मेदारी के ज्ञान का विकास करना।

3) विद्यार्थियों के बीच प्रजातांत्रिक नागरिकता के गुणों को विकसित करना।

4) विद्यार्थियों के बीच देश भक्ति की भावना, राष्ट्रीय भावना एवं अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करना।

5) विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक संस्थाओं में सहयोग करने में सहायता करना।

6) विद्यार्थियों को वर्तमान एवं भविष्य में आने वाले सामाजिक मुद्दों एवं चुनौतियों को हल करने के लिए प्रशिक्षित करना।

7) विद्यार्थियों का नैतिक मूल्य, संवेगात्मक गुण एवं संबंधों की समझ की जानकारी को विकसित करना।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर, ''सामाजिक विज्ञान शिक्षण (2006) पर राष्ट्रीय अभिकेंद्रित समूह'' की टिप्पणी:

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य–

– मानव जाति और जीवन के अन्य रूपों के निवास के रूप में पृथ्वी के बारे में समझ विकसित करना।

– भूमण्डलीय संदर्भों में विद्यार्थी के अपने क्षेत्र, राज्य एवं देश के अध्ययन प्रति जागरूक करना।

– देश की सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थानों की क्रियात्मकता एवं गत्यात्मकता और प्रक्रिया से विद्यार्थी को परिचित कराना।

– विश्व के अन्य भागों में समकालीन विकास के संदर्भ में भारत के इतिहास के अध्ययन का सूत्रपात करना।

इस अवस्था पर, साामजिक विज्ञान के विषय क्षेत्र, जहां से उनकी पाठ्यवस्तु को बनाया जाता है वे है, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र आदि से भी परिचित कराया जायेगा। बच्चे को साथ-साथ समकालीन मुद्दों एवं समस्याओं से परिचित कराया जा सकता

टिप्पणी

है। कुछ इस प्रकार के मुद्दो जैसे गरीबी, निरक्षरता, बाल एवं बंधुआ मजदूरी, स्तर, जाति, लिंग एवं वातावरण आदि पर बल दिया जाना चाहिए। भूगोल एवं अर्थशास्त्र दोनों साथ-साथ विभिन्न स्तरों पर वातावरण, संसाधन एवं विकास से संबंधित मुद्दों को स्थानीय से लेकर वैश्विक तक एक सटीक संदर्भ/परिप्रेक्ष्य को विकसित करने में सहायता करते है। इसी प्रकार से, इतिहास को बहुमतता की अवधारणा पर बल देते हुए पढ़ाया जायेगा। बच्चों को स्थानीय, राज्य तथा केंद्रीय स्तर की सरकारों के निर्माण एवं कार्यवाही की जानकारी होना आवश्यक है एवं सहभागिता के प्रजातांत्रिक प्रक्रिया की जानकारी होना भी आवश्यक है।

प्रगति जांच–1

नोट–नीचे दिये गये स्थान पर अपना उत्तर लिखें और अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अन्त में दिये गये आदर्श उत्तर से करें।

- सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय अभिकेंद्रित समूह के अनुसार (2006) उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के क्या उद्देश्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 सामाजिक विज्ञान : विभिन्न कालों में

वास्तव में, सामाजिक विज्ञान का अधिगम कोई नया नहीं है। सामाजिक विज्ञान का अधिगम इस संसार में नागरिकता के सृजन के प्रथम दिन से ही शिक्षाा व्यवस्था का एक तरीके या दूसरे तरीके से भाग बन गया है। आओ देखें, सामाजिक विज्ञान ने विभिन्न कालों में अपनी प्रगति के रास्ते को कैसे पार किया।

1.3.1 पूर्व आधुनिक संसार में सामाजिक विज्ञान–

अठारहवीं/ उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान आधुनिक दुनिया की शुरूआत हुई जबकि पूर्व आधुनिकाल दुनिया में मानव समाज के सृजन से लेकर सत्रहवीं/अठारहवीं शताब्दी तक एक लम्बा समय तय किया।

पूर्व आधुनिक संसार ने मानव सभ्यता के अनेकों चरणों का अनुभव किया है जैसे–एकत्रित होकर शिकार करने का काल से घुमक्कड़, चरवाह काल, पत्थर युग, लौह युग, नदी घाटी सभ्यता और मध्ययुगीनकाल से अठारहवीं/उन्नीसवीं शताब्दी तक जब से मनुष्य मात्र ने अपने कदम इस संसार में रखे है और परिवार/समाज की स्थापना की है, समाज/सामाजिक व्यवस्था को समझना उनके लिए अनिवार्य हो गया है। इसलिए, सामाजिक विज्ञान अधिगम की आवश्यकता थी। उन दिनों सामाजिक विज्ञान अधिगम अनौपचारिक तथा असंगठित रूप में था। दिन–प्रतिदिन मानव समाज जटिल हो गया, और सामाजिक आवश्यकताएं एवं चुनौतियां गुणात्मक रूप में बढ़ी, इसी के अनुसार सामाजिक विज्ञान का अध्ययन आवश्यक हो गया।

प्राचीन एवं मध्ययुगीन संसार में, आधुनिक संसार की तुलना में सामाजिक विज्ञान से संदर्भित बहुत कम विचार थे। सुकरात, प्लेटो, अरस्तु एवं अन्य अनेकों बौद्धिक विचारकों ने प्राचीन काल में सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दिया। प्लेटो का 'प्रजातांत्रिक कार्य' एवं अरस्तु का 'राजनीतिक कार्य' सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में सदैव स्मरणीय है। सामाजिक विज्ञान का विचार 'यूनान की नागरिक शपथ' में प्रस्तुत किया गया, जब वे परिपक्वता को प्राप्त करने के बाद नागरिकता में प्रवेश करते थे, तब वे एक औपचारिक समारोह में ये शपथ लेते थे। ''हम अपने शहर को अपने किसी कायरतापूर्ण कार्य या कपट पूर्ण कार्य से कभी भी कलंकित नहीं करेंगे, और ना ही विपरीत परिस्थिति में फंसे अपने साथी को छोड़ कर भागेंगे। हम अपने शहर की पवित्र चीजों एवं आदर्शों के लिए अकेले या अनेकों के साथ लड़ेंगे; हम अपने शहर के कानून का आदर व सम्मान करेंगे और जो हमारे बीच में रहते है तथा उन्हें नष्ट करने और तिरस्कार करने के लिए उद्यत रहते है उनमें इसी प्रकार की सम्मान की भावना जागृत करने के लिए श्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। हम लगातार नागरिक विचारों की जन भावना की तेजी के लिए प्रयास करेंगे। अत: इन सभी तरीकों में, हम शहर को अच्छे से अच्छा एवं सुन्दर से सुंदर वो सभी कुछ या उससे भी अधिक देने की कोशिश करेंगे जितना उसने हमें दिया है। ''मध्यकालीन एवं पूर्व आधुनिक संसार में, बड़ी मात्रा में विषय, जो सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करने के लिए व्यापक निहितार्थ रखते है जैसे धार्मिक अध्ययन, अर्थशास्त्र एवं बिजनेस स्टडी, राष्ट्रीय संबंध ों का अध्ययन आदि शिक्षा व्यवस्था का भाग बन गये है।

1.3.2 आधुनिक एवं समकालीन संसार में सामाजिक विज्ञान

पूर्व की इकाइयों में हमने आधुनिक युग में सामाजिक विज्ञान के विकास की औपचारिक अध्ययन क्षेत्र के रूप में चर्चा की है। समय और समाज की प्रकृति में सामाजिक विज्ञान के अधिगम को अधिक औपचारिक एवं व्यवस्थित बनाया है। आधुनिक युग में दिन प्रतिदिन कई नयी समस्याएं उत्पन्न हो रही है तदनुसार नये सामाजिक विज्ञान का विकास इन समस्याओं को कम करने या हल करने के लिए किया जा रहा है। पूर्व की इकाई में हमने यह भी जिक्र किया है कि अठारहवीं सदी में सामाजिक विज्ञान उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम का एक औपचारिक हिस्सा बन चुका है तथा बीसवीं सदी में विद्यालयी पाठ्यक्रम का भी यह हिस्सा बन चुका है। विशेषकर दो विश्व युद्धों के बाद संसार के अधिकतम हिस्सों में सामाजिक विज्ञान को पाठ्यक्रम में महत्ता दी गयी है। युद्ध के बाद के समय में ज्यादातर शिक्षा से संबंधित

टिप्पणी

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे–UNESCO, UNICEF, UNDP, UNO आदि स्वस्थ सामाजिक जीवन को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रही है जो अन्ततः सामाजिक विज्ञान सीखने पर बल देता है।

Article-I अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार घोषणा (1948) के अनुच्छेद-1, जिसको संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनाया है, में वर्णित हैं कि सभी मानव जन्म से स्वतंत्र है और सम्मान तथा अधिकार में बराबर है, वे तर्क और विवेक से पूर्ण है तथा उन्हें एक दूसरे के प्रति भाई-चारे की भावना से व्यवहार करना चाहिए। Delors Commission (1996) एक साथ जीने के अधिगम पर विशेष बल देता है। आधुनिक संसार की विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं को हल करने और सौहार्दपूर्ण ढंग से एक साथ रहने के गुणों को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक विज्ञान आधुनिक जगत के औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा का अहम हिस्सा बन चुका है। विभिन्न राष्ट्रों के निर्माण से और प्रजातांत्रिक एवं समाजवादी मॉडल के अनुसार समकालीन दुनिया के देशों में प्रशासन के कारण सामाजिक विज्ञान के अधिगम को विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर आवश्यक बना दिया है। क्योंकि सामाजिक विज्ञान प्रभावकारी नागरिक बनाने के लिए जिम्मेदारी लेता है ताकि राष्ट्रों में प्रजातांत्रिक एवं समाजवादी प्रशासन चलाया जा सके।

1.3.3 भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विज्ञानः विभिन्न कालों में

विभिन्न कालों की शिक्षा पद्धति में सामाजिक विज्ञान एक अहम हिस्सा बन चुका है, नैतिकता, अध्यात्मिकता, सामाजिक मूल्यों और वृत्तियों आदि जीवन के भारतीय जीवन दर्शन का पथ प्रदर्शन कर रहे है और सदियों से जी रहे है, वेद, उपनिषद, स्मृति पुराण, रामायण, महाभारत, पूर्व एतिहासिक भारतीय ग्रन्थ है जिसमें सामाजिक मूल्यों एवं स्वस्थ जीवन जीने के सिद्धांत समाहित है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विष्णुशर्मा का पंचतंत्र आदि प्राचीन भारत की कुछ ऐसी रचनाएं है जो सामाजिक विज्ञान की नीतियों और सिद्धांतों से संबंध रखती है। मध्यकालीन और पूर्व मध्यकालीन साहित्यिक परम्पराओं जैसे बुद्ध की रचनाएं, जैन रचनाएं, इस्लामिक रचनाएं, भक्ति रचनाएं आदि को सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों और धरोहरों की रचनाएं समझा जाता है। इन सभी संदर्भों को देखते हुए हम कह सकते है कि सामाजिक ज्ञान प्राचीन तथा मध्यकाल से भारतीय शिक्षा और संस्कृति, पद्धति दोनों का एक अहम हिस्सा बन गया था। परन्तु भारतीय उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालयी शिक्षा पद्धति में सामाजिक विज्ञान औपचारिक रूप से 18वीं, 19वीं सदी में बन चुका है तथा गांधी जी के मूलभूत शिक्षा के सिद्धांत के बाद से भारतीय विद्यालय शिक्षा पद्धति का भी औपचारिक हिस्सा बन चुका है। आओ, शिक्षा योजनाओं और नीतियों के द्वारा विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान को समय-समय पर किस प्रकार से देखा गया है, इसका परीक्षण निम्न प्रकार से करते है–

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) की टिप्पणी–

भारतीय शिक्षा में सामाजिक अध्ययन तुलनात्मक रूप से एक नया शब्द है। इसका अर्थ है पारम्परिक रूप से इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र से जुड़े क्षेत्र का समावेश करना है। सामाजिक अध्ययन विषयों के समूह का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके सामाजिक

वातावरण से परिचित कराना और ढालना है, जिसमें परिवार, समुदाय, राज्य और राष्ट्र शामिल है; इसका एक उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना ताकि वह यह समझ सके कि वर्तमान समाज का ढांचा किस प्रकार उभरा तथा विद्वता पूर्वक सामाजिक ताकतो और आंदोलन के व्यूह की व्याख्या करना, जिसमें वे रह रहे है।

शिक्षा आयोग (1964-66) की टिप्पणी–

सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य, विद्यार्थियों को उनके वातावरण के ज्ञान के बारे में परिचित कराने में सहयोग प्रदान करना है। मानव संबंधों को समझने में तथा ऐसी वृत्तियां और मूल्य जो कि बुद्धिमत्तापूर्ण समुदाय, राज्य और राष्ट्र तथा विश्व के मामलों में भाग लेने के लिए आवश्यक हे, को समझने में सहायता करता है। भारतीय संदर्भ में सामाजिक अध्ययन का एक प्रभावकारी कार्यक्रम तैयार कर, अच्छे नागरिक एवं भावनात्मक एकात्मकता के विकास के लिए आवश्यक है।

दस वर्षीय विद्यालय के लिए पाठ्यक्रम NCERT की रूपरेखा (1975) की टिप्पणी–

कक्षा प्रथम व द्वितीय में पर्यावरण अध्ययन में प्राकृतिक और सामाजिक अध्ययन दोनों शामिल होंगे। प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की बजाए सामाजिक अध्ययन शब्द का उपयोग अधिक उपयुक्त होगा क्योंकि यह विस्तृत और संयुक्त अनुदेशात्मक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा (1988) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की टिप्पणी–

सामाजिक विज्ञान शायद एक अकेला ही ऐसा पाठ्यक्रम क्षेत्र है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के विचारित मुख्य घटकों के संदर्भों में शिक्षा उपलब्ध कराने का एक सबसे अधिक प्रभावकारी उपकरण सिद्ध किया जा सकता है। NPA के द्वारा विचारित मुख्य घटक निम्नांकित है–

1) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास
2) संवैधानिक जिम्मेदारियाँ
3) मूल्य जैसे–भारत की साझा सांस्कृतिक धरोहर
4) समानतावाद, प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षवाद
5) लिंग समानता
6) वातावरण की सुरक्षा
7) छोटे परिवार की नीति

टिप्पणी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)–

सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत समाज के विभिन्न सरोकारों का समाविष्ट करता है। इसकी अन्तर्वस्तु बहुत विविध है जिसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानव विज्ञान जैसे विषयों से विषयवस्तु समाहित करता है। सामाजिक विज्ञान परिप्रेक्ष्य और ज्ञान, एक समतामूलक और शांतिमूलक समाज का ज्ञान-आधार तैयार करने की दिशा में अपरिहार्य है। इसकी विषय-वस्तु का लक्ष्य जानी-पहचानी सामाजिक सच्चाई की समीक्षात्मक जांच तथा उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों की आलोचनात्मक जागरूकता का संवर्धन होना चाहिए। विद्यार्थियों के अपने जीवन-संदर्भों के संबंध में नये आयामों और नये पहलुओं को जगह दी जा सकती है। एक सार्थक पाठ्यचर्या के लिए सामग्री चयन और उनका निर्धारण, ऐसी पाठ्यचर्या जो विद्यार्थियों में समाज के प्रति आलोचनात्मक समझ का विकास करे, इसलिए यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

प्रगति जाँच-2

- प्राचीन भारतीय संस्कृति/शिक्षा पद्धति में सामाजिक विज्ञान अधिगम के स्थान की व्याख्या कीजिए?

(**नोट:**–नीचे दिये गये स्थान पर अपना उत्तर लिखे और इस इकाई के अंत में दिये गये आदर्श उत्तर से अपने उत्तर की जांच करें।)

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 समाज की वर्तमान स्थिति–

वर्तमान समाज, प्राचीन समाज से विकसित हुआ है। लोग वर्तमान समाज को आधुनिक समाज या पूर्व आधुनिक मानते है। वर्तमान समाज में कुछ ऐसी खास विशेषताएं है जो पहले के समाज में नहीं थी अर्थात प्राचीन, मध्यकाल, और पूर्व आधुनिक समाजों से हम वर्तमान सामाजिक परिघटना और चुनौतियों तथा वर्तमान सामाजिक परिघटना और चुनौतियों के संदर्भ में सामाजिक विज्ञान की भूमिका की चर्चा करेंगे

1.4.1 वर्तमान सामाजिक घटनाएं एवं चुनौतियां–

वर्तमान समाज 21वीं सदी का समाज है जिसमें परिवर्तन, परेशानियां, मुद्दे और चुनौतियों से

संबंधित अनेकों विशेषताओं का अनुभव करता है। निम्नांकित बिंदु वर्तमान सामाजिक पद्धति एवं घटनाओं की विशेषताओं को बतलाते है–

1) तीव्र गति से विज्ञान व तकनीकी के विकास पर आधारित आज का समाज तेजी से बढ़ रहा है।

2) जीवन के कई क्षेत्रो में जटिलताएं, विषमांगताएं और भिन्नताएं वर्तमान समाज की राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक) विशेषताएं है।

3) नये सामाजिक स्वरूप जैसे आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, शहरीकरण, विशिष्टीकरण, भूमंडलीकरण, प्राइवेटाईजेशन, स्वचालित करण उदारीकरण, नियोजित विकास आदि वर्तमान समाज की मूलभूत विशेषताएं है।

4) नये सामाजिक मूल्य जैसे प्रजातंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षवाद, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत अधिकार, तार्किक सोच आदि आधुनिक सामाजिक पद्धति की देन है।

5) बड़ी संख्या में सामाजिक गमन, बहु-संस्कृतिवाद, विभिन्न संस्कृतियाँ, बहु भाषावाद तथा सामाजिक एवं कुरीतिक सामाजिक प्रथाओं का कम होना आधुनिक समाज में बहुतायत रूप से दृष्टिगोचर है।

6) वर्तमान समाज को अनेकों नयी सामाजिक समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जैसे–गरीबी, बेरोजगारी, पूंजीवाद पर आधारित शोषण, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की भिन्नताएं, झुग्गी-झोंपड़ी संस्कृति का विकास, सामाजिक दुराव, जनसंख्या समस्या, अव्यवस्थित परिवार, सामाजिक अपराध, काला बाजारी, सामाजिक अशांति, क्षेत्रवाद, अल्प विकास, पर्यावरण के साथ छेड़-छाड़, सूचना एवं ज्ञान के विस्फोट से उत्पन्न समस्याएं आदि।

1.4.2 विभेदीकृत समाज में सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र–

विभेदीकृत समाज एक विषमांगी तथा पेचीदा समाज है जो कि कई सामाजिक समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करता है। वर्तमान समाज एक विभेदीकृत समाज है जहां बड़ी संख्या में सामाजिक समस्याएं व्याप्त है। इनमें से कुछ ऐसी समस्याएं, जिनका वर्तमान समाज सामना करता है, इस इकाई के उपरोक्त भाग में (1.4.1) इनको दर्शाया गया है। जैसा कि वर्तमान समाज विज्ञान तथा तकनीकी प्रगतिशील मीडिया और अन्य अनेकों चीजो के प्रभाव के कारण बड़ी तीव्र गति से बदल रहा है और नई सामाजिक समस्याएं दिन-प्रतिदिन पनप रही है। इस प्रकार से नये सामाजिक विज्ञान का उदय हो रहा है और इस प्रकार की नयी सामाजिक समस्याओं को समझने व सुलझाने के लिए शिक्षा व्यवस्था का भाग बन रहा है। 18वीं एवं 19वीं सदी में सामाजिक विज्ञान विषय जैसे–सामाजिक कार्य, लोक प्रशासन, अपराध विज्ञान, मनोविज्ञान एवं जनसांख्यिकी विज्ञान आदि का कम अस्तित्व था, लेकिन पिछली एवं वर्तमान सदी में, इन विषयों ने महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है क्योंकि नयीं सामाजिक समस्याएं इनसे संबंधित है। उदाहरण–18वीं एवं यहां तक कि 19वीं सदी में, जनसंख्या से संबंधित मुद्दे विशेषकर जनसंख्या वृद्धि कोई महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा नहीं था, लेकिन पिछली एवं वर्तमान

टिप्पणी

सदी में, जनसंख्या वृद्धि से संबंधित जटिलताओं ने सामाजिक जीवन के बहुत से पहलुओं को प्रभावित किया है जिसके लिए विषय जनसांख्यिकी विज्ञान शिक्षा व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण भाग के रूप में प्रकट हुआ है। पूर्व आधुनिक समाज में, लोगों का जीवन सामान्य था, अपराधिक कम थे, लेकिन, आधुनिक औद्योगिक समाज में, गतिविधियाँ मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापत है। और गतिविधियाँ संबंधित इन सभी रोगों की जांच के लिए सामाजिक विज्ञान का विषय 'अपराध विज्ञान' का उदय हुआ और शिक्षा व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण भाग बन गया। इसी प्रकार से अनेकों सामाजिक विज्ञान के विषयों का, सामाजिक समस्याओं की परिवर्तनशील प्रकृति को समझने के लिए दिन-प्रतिदिन उदय हो रहा है। इसलिए सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र धीरे-धीरे विस्तृत हो रहा है।

प्रगति जांच–3

(**नोट:**–अपना उत्तर नीचे दिये गये स्थान पर लिखिए और अपने उत्तर की तुलना आदर्श उत्तर से कीजिए जो इस इकाई के अंत में दिया गया है)

- नये सामाजिक विज्ञानों का उदय दिन-प्रतिदिन क्यों हो रहा है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 सामाजिक विज्ञान के घटक–

सामाजिक विज्ञान मूलभूत रूप से अध्ययन के क्षेत्र की रचना करता है। यद्यपि सामाजिक विज्ञान के जन्म को कम ही समय हुआ है, फिर भी सामाजिक विज्ञान ने स्वयं को अध्ययन के अन्य क्षेत्रों की तुलना में महत्त्वपूर्व रूप से स्थापित कर लिया है। यह सामाजिक घटनाओं से संबंधित, समय, संदर्भ, चुनौतियां आदि का प्रभाव है, जिसने सामाजिक विज्ञान को अध्ययन का एक क्षेत्र बनाया है। अब हम ये चर्चा करेंगे कि सामाजिक विज्ञान अध्ययन के क्षेत्र की रचना कैसे करता है और सामाजिक विज्ञान के विद्यालय स्तर पर अनुदेशनात्मक घटक क्या है।

1.5.1 सामाजिक विज्ञान परिवार के अंतर्गत सुविचारित विषय–

ज्ञान एक एकीकृत अवधारणा है और इसे विभिन्न अलग विषयों के रूप में टुकड़े-टुकड़े नहीं किया जा सकता है बल्कि ज्ञान को एक निश्चित विस्तारित क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता

है। जिनके मध्य पर्याप्त संबंध हो ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र उपागम का निम्नलिखित तालिका से अनुमान निकाला जा सकता है।

ज्ञान का विस्तृत क्षेत्र उपागम

अध्ययन का क्षेत्र	अध्ययन के क्षेत्र के अंतर्गत सुविचारित विषय
भौतिक विज्ञान	भौतिकी रसायन विज्ञान पृथ्वी विज्ञान आदि
गणितीय विज्ञान	अंकगणित ज्यामितीय Mensuration आदि बीजगणित
जीव विज्ञान	जन्तु विज्ञान वनस्पति विज्ञान Bio-Technology Microbiology आदि
सामाजिक विज्ञान	अर्थशास्त्र इतिहास राजनीति विज्ञान मनोविज्ञान आदि
भाषा अध्ययन	बहु–भाषा अध्ययन साहित्य नाटक और उपन्यास आदि

ज्ञान की एक शाखा को अध्ययन का क्षेत्र कहने के लिए कुछ निश्चित शर्तों को पूरा करना अनिवार्य है। तीन मुख्य शर्तें जिनको अध्ययन के क्षेत्र की प्रकृति की विशेषताओं को बताता है। निम्नलिखित तीन बिंदुओं के रूप में दिया गया है–

1) कई व्यक्तिगत विषयों का समावेश एक क्षेत्र में अवश्य होने चाहिए।

2) एक अध्ययन क्षेत्र में आने वाले विषयों के बीच कार्यकारी संबंध एवं अंतर होता है।

3) विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों के विषयों या अध्ययन क्षेत्रों के बीच क्रियात्मक संबंध और अंतर होता है।

टिप्पणी

ज्ञान की शाखा के रूप में सामाजिक विज्ञान उपर्युक्त सभी तीनों शर्तों को पूरा करता है जिनको अध्ययन का क्षेत्र कहा गया है। पहला बिंदु, सामाजिक विज्ञान में बड़ी संख्या में व्यक्तिगत विषय शामिल है जैसे–इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, विधि आदि। द्वितीय बिंदु, सभी सामाजिक विज्ञान के विषयों के बीच क्रियात्मक संबंध एवं अंतर होता है। सामाजिक विज्ञान के विषय एक दूसरे से संबंधित है क्योंकि मानवीय संबंध सामाजिक विज्ञान के सभी विषयों में उभयनिष्ठ है। आगे, सामाजिक विज्ञान के सभी विषयों के बीच अंतर को अंकित किया गया है। उदाहरण–अर्थशास्त्र अध्ययन समाज में पूंजी का संबंध है, राजनीतिक विज्ञान अध्ययन समाज की शासन प्रणाली है, एवं विधि अध्ययन समाज का कानूनी संस्थान है आदि। तृतीय बिंदु, सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र और/या सामाजिक विज्ञान क्षेत्र का विषय अन्य क्षेत्रों और/या अन्य क्षेत्रों के विषयों के साथ क्रियात्मक संबंध तथा अंतर रखते है। उदाहरण–चूंकि अध्ययन के सभी क्षेत्र ज्ञान की शाखाएं है तथा ज्ञान प्राथमिक रूप से इकाई संबंधी अवध ारणा/घटना है, इसलिए, सामाजिक विज्ञान क्षेत्र या सामाजिक विज्ञान क्षेत्र के विषय कई विशेषताएँ रखता है जो अन्य क्षेत्रों और/या अन्य क्षेत्रों के विषयों में उभयनिष्ठ हे। इस संबंध में विस्तृत चर्चा इस इकाई के बाद के भागों में की गयी है। आगे, सामाजिक विज्ञान क्षेत्र एवं इसके विषय क्रियात्मक रूप से अन्य क्षेत्रों एवं उनके विषयों से भिन्न है। जबकि सामाजिक विज्ञान के विषय सामाजिक संबंधों का अध्ययन है; भौतिक विज्ञान विषय भौतिक मामलों/वस्तुओं/क्रियाकलापों जैसे–धारा, ऊष्मा, प्रकाश, रसायन आदि का अध्ययन है। जीव विज्ञान ने विषय जानवरों एवं पौधों के जीवन का अध्ययन है, गणितीय विज्ञान विषय संख्या पद्धति एवं संबंधित अवधारणाओं का अध्ययन है।

सामाजिक विज्ञान परिवार में बहुत से विषयों को शामिल किया जाता है। कुछ सामाजिक विज्ञान विषय जैसे–राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, दर्शन शास्त्र आदि बहुत पुराने है। जबकि कुछ सामाजिक विज्ञान विषय जैसे मानवाधिकार, लोक प्रशासन, सामाजिक कार्य आदि विकास के प्रारम्भिक स्तर पर है। सामाजिक विज्ञान विषयों को निम्नांकित तीन शाखाओं/शीर्षों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

विशुद्ध सामाजिक विज्ञान–राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, न्याय शास्त्र, विधि, समाज शास्त्र, लोक प्रशासन, मानवाधिकार और मानव शास्त्र आदि।

अर्ध सामाजिक विज्ञान–नैतिक, शिक्षा, दर्शन, मनोविज्ञान, कला आदि।

सामाजिक निहितार्थ से संबंधित विज्ञान–भूगोल, जीव विज्ञान, मेडिसिन, पुस्तकालय विज्ञान, आदि।

1.5.2 विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अनुदेशात्मक घटक–

यह पहले भी चर्चा की जा चुकी है कि विद्यालय स्तर पर सामाजिक अध्ययन (सामाजिक विज्ञान) पाठ्यचर्या में बड़े स्तर पर सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु समावेषित करता है। विद्यालय के विद्यार्थियों को सामाजिक अध्ययन पढ़ाने के लिए इतिहास, भूगोल आदि के विषय वस्तु को चयन करके एकीकृत रूप में व्यवस्थित किया जाता है। CBSE के वर्तमान सामाजिक

विज्ञान पाठ्यक्रम में (NCERT द्वारा प्रकाशित) उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर के लिए तीन विषय क्षेत्रों को शामिल किया गया है, अर्थात इतिहास, भूगोल, सामाजिक और राजनीतिक जीवन।

उच्च प्राथमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम से संबंधित विस्तृत विवरण इस कोर्स के आगामी इकाइयों में उपलब्ध कराया जायेगा। इसी प्रकार CBSE के माध्यमिक विद्यालय स्तर के लिए सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम (NCERT द्वारा प्रकाशित) में चार विषय क्षेत्रों को शामिल किया गया है जैसे इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र/और उच्च माध्यमिक स्तर पर बहुत से सामाजिक विज्ञान विषयों को विशिष्ट विषय के रूप में पढ़ाया जाता है जैसे–इतिहास, राजनीति विज्ञान, मानव शास्त्र समाजशास्त्र आदि। चित्र 1-2 में उच्च प्राथमिक स्तर/माध्यमिक विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के विभिन्न अनुदेशात्मक विषय/घटक नीचे आपके लिए प्रदर्शित किया गया है–

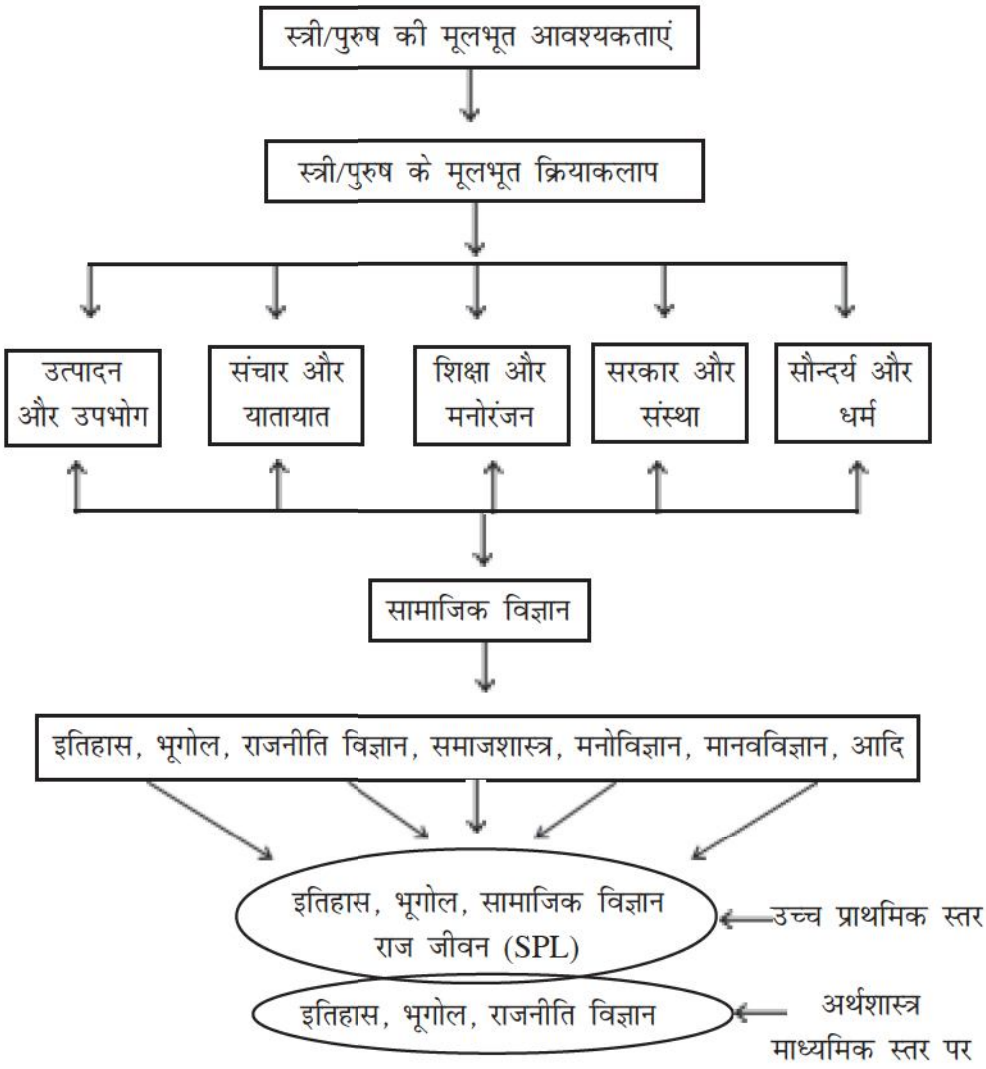

आकृति 1.2 उच्च प्राथमिक स्तर/माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अनुदेशात्मक विषय/घटक

टिप्पणी

प्रगति जांच–4

- तीन शर्तें लिखिये जो किसी ज्ञान की क्षेत्र की विशेषता को दर्शाती हो। सामाजिक विज्ञान क्षेत्र के अंतर्गत अध्ययन किये जाने वाले किन्हीं पांच विषयों का नाम लिखिये?

(**नोट**–अपना उत्तर नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर लिखिये तथा इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से तुलना करें)

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 सामाजिक विज्ञान में अंतर्विषयक और एकीकरण परिप्रेक्ष्य

चूंकि ज्ञान को सटीक विधि से विभाजित नहीं किया जा सकता है एक विषय या ज्ञान के क्षेत्र को अपने आप में स्वतंत्र या स्वत:परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इस इकाई के पहले भाग में आप यह सीख चुके है कि विभिन्न विषयों तथा ज्ञान के क्षेत्र में एक क्रियात्मक संबंध होता है। इसी प्रकार विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषयों के मध्य तथा ज्ञान के अन्य विभिन्न क्षेत्रों के मध्य एक क्रियात्मक संबंध होता है। आओ सामाजिक विज्ञान में अंतर्विषयक और एकीकरण परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करते है।

1.6.1 सामाजिक विज्ञान में अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य

सामाजिक विज्ञान विषयों की प्रकृति अन्तर्विषयक है। सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत एक विषय का संबंध सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों से तथा अन्य क्षेत्रों के विषयों जैसे भौतिक शास्त्र, भाषा अध्ययन, जीवविज्ञान आदि के साथ संबंध रखता है। इस संबंध को स्पष्ट करने के लिए यहां पर उदाहरण दिया गया है। आओ सामाजिक विज्ञान विषय 'इतिहास' के प्रकृति का विश्लेषण करते है।

इतिहास विषय की प्रकृति अंतर्विषयक है जब हम इतिहास का अध्ययन करते है तब हम सामाजिक विज्ञान के कई विषयों जैसे अर्थशास्त्र का इतिहास, राजनीति इतिहास, मनोविज्ञान का इतिहास, सामाजिक शास्त्र का इतिहास, धार्मिक इतिहास आदि का भी अध्ययन करते है। इसके अतिरिक्त कई अन्य विषयों जैसे भौतिक, रसायन, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित, विभिन्न भाषाओं का इतिहास भी इतिहास के भागों का हिस्सा है। इसी तरह, सामाजिक विज्ञान का एक विषय समाज शास्त्र से संबंधित मुद्दों का अध्ययन अर्थशास्त्र, शिक्षा, राजनीति, वैज्ञानिक

विकास, भाषा और साहित्य आदि का विचार किये बिना नहीं किया जा सकता है। इतिहास और समाज शास्त्र की तरह सामाजिक विज्ञान का प्रत्येक विषय समान अध्ययन क्षेत्र के विषयों (अर्थात सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र) तथा अन्य क्षेत्रों (जैसे गणित, जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि) के विषयों से अंतर संबंध तथा अंतनिर्भरता रखता है। परन्तु सामाजिक विज्ञान का एक विषय सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों से अधिक संबंध रखता है जबकि अन्य अध्ययन क्षेत्रों के विषयों से कम संबंध रखता है। चित्र 1.3 में सामाजिक विज्ञान विषय 'विधी' का अन्य विषयों से अंतनिर्भरता दर्शाया गया है।

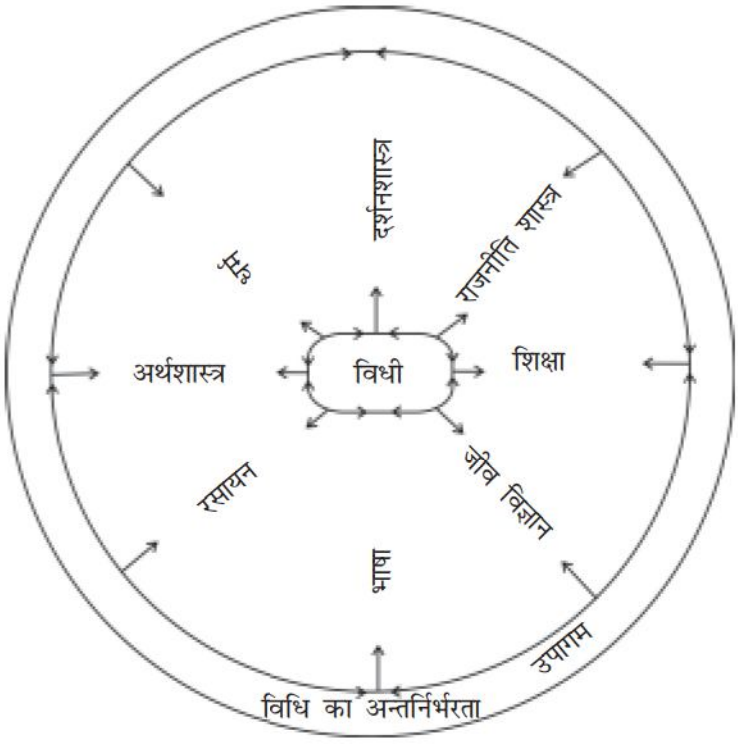

चित्र 1.3 सामाजिक विज्ञान विषय 'विधी' का अन्य विषयों पर अंतर्निर्भरता

1.6.2 सामाजिक विज्ञान में एकीकृत परिप्रेक्ष्य

चूंकि पूर्णरूप से ज्ञान का विभाजन करना असंभव है, शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान एकात्मक रूप से करना बेहतर है। अत: विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का पठन-पाठन करते समय इसे एकात्मक रूप से ही ज्ञान प्रदान करना चाहिए। आओ अब एक उदाहरण के साथ यह समझने का प्रयास करते है कि सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति किस प्रकार से अंतर्निभर और समाकलित है। विद्यालय स्तर पर भोजन, कपड़ा, आश्रय, यातायात, संचार आदि सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का सामान्य अधिगम अवधारणायें है। भोजन के अवधारणा को लिजिये, भोजन का विभिन्न विषयों से सहसंबंध निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

टिप्पणी

भोजन का उत्पादन, क्रय-विक्रय, उपभोग आदि अर्थशास्त्र से संबंधित है भोजन आदत, भोजन रीति, परिवार तथा समाज में भोजन को लेकर उत्पन्न हुए गलतफहमियां आदि समाजशास्त्र से संबंधित है। भोजन के वितरण में समानता, बजट, मूल्य में कमी व वृद्धि राजनीति शास्त्र से संबंधित है, विभिन्न कालों में भोजन संबंधी मुद्दे, विभिन्न कालों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के भोजन आदि इतिहास से संबंध रखते है, विभिन्न स्वाद वाले भोजन तैयार करना, शुद्ध भोजन, स्वच्छ भोजन आदि गृह विज्ञान से संबंधित है। भोजन का परिमाण, विभाजन, भाग आदि गणित संबंधी है, भोजन में उपलब्ध विटामिन, व पोषक तत्व आदि जीवन विज्ञान से संबंधित है, स्वच्छता, भोजन की मात्रा, आदि स्वास्थ्य व स्वच्छता से संबंधित है, विभिन्न विद्युत उपकरण जिसका उपयोग भोजन बनाने में जैसे भोजन को कितनी गर्मी की आवश्यकता है, भोजन बनाने में माइक्रोवेव का उपयोग, भोजन का शीतलीकरण भौतिक से संबंधित है, भोजन का रासायनिक बंध रसायन के द्वारा भोजन का प्रतिरक्षण करना आदि रसायन शास्त्र से संबंधित, विभिन्न प्रकार के भोजन के उत्पादन के लिए आवश्यक भूमि तथा भोजन के लिए सहयोगी वातावरण आदि भूगोल से संबंधित है और भोजन पर आधारित कवितायें, कहानियां शाब्दिक अधिगम, निबंध आदि भाषा और साहित्य से संबंधित है। इस प्रकार भोजन की अवधारणा को कई अधिगम क्षेत्रों और विषयों से जोड़ा जा सकता है। भोजन की अवधारणा की तरह सामाजिक विज्ञान के कई अन्य अवधारणाओं को को अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों के विषयों को शिक्षण अधिगम के लिए तथा अन्य कई उद्देश्यों के लिए एकीकृत किया जा सकता है। आओ एक क्रियाकलाप के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में ज्ञान का एकीकरण और अधिगम को समझते है।

सामाजिक विज्ञान में ज्ञान का एकीकरण दर्शाता एक क्रियाकलाप

यह एक कक्षाकक्ष पर आधारित क्रियाकलाप है जिसमें उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में ज्ञान का एकीकरण और अधिगम को दर्शाया गया है। इस क्रियाकलाप में कक्षा VI के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भूगोल विषय से 'वन' की अवधारणा को शिक्षार्थियों को अंतर्विषयक और एकीकृत ज्ञान उपलब्ध कराने के लिया गया है। क्रियाकलाप की रूपरेखा, क्रियाकलाप विधि, और क्रियाकलाप आधारित दत्तकर्य से संबंधित विवरण नीचे दिया गया है।

A : क्रियाकलाप रूपरेखा:

कक्षा	:	VI
अधिगम विषय	:	सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम
अधिगम क्षेत्र	:	सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का भूगोल
अधिगम विषयवस्तु	:	वन
अधिगम उद्देश्य	:	'वन' अवधारणा से संबंधित एकीकृत ज्ञान को बढ़ावा देना
आवश्यक सामग्री	:	वन से संबंधित पोस्टर
अधिगम विधी	:	पोस्टर प्रदर्शन
अधिगम प्रकार	:	व्यक्तिपरक

B : क्रियाकलाप प्रक्रिया

इस क्रियाकलाप में अध्यापक, विद्यार्थी को वन की अवधारणा से संबंधित एकीकृत ज्ञान को बढ़ाने के लिए, निम्न प्रकार से दिशा निर्देश देगा–

प्रिय विद्यार्थी, नीचे दो पोस्टर दिये गये हैं (या पोस्टर का चित्र) जिसमें वन की अवधारणा को समझाया गया है, इनमें से एक पोस्टर विधी विषय से संबंधित है और दूसरा पोस्टर जीवन विज्ञान से संबंधित है। आओ विश्लेषण करते है कि प्रथम पोस्टर 'विधि' से तथा दूसरा पोस्टर जीवन विज्ञान से क्यों संबंधित है।

पोस्टर 1

वन की अवधारणा और 'विधि' से इसके संबंध को प्रदर्शित पोस्टर

यह पोस्टर विधि विषय से क्यों संबंधित किया जा सकता है

वन को काटने पर कई राज्यों में प्रतिबंध है। एक व्यक्ति जो वन को काटता है उसे न्यायालय द्वारा दंडित किया जाता है। पोस्टर को देखिये किस प्रकार एक व्यक्ति को दंड के लिए जेल ले जा रहा है क्योंकि उसने वन को काटा है। चूंकि दंडविधान विधि विषय में पढ़ा जाता है इसलिए इस पोस्टर को 'विधी' विषय से जोड़ा जा सकता है। वन काटिये जेल जाइये।

पोस्टर 2

वन अवधारणा से संबंधित पोस्टर

यह पोस्टर जीवन विज्ञान विषय से क्यों जोड़ा जा सकता है।

हवा, पानी आदि जीवन का मूलभूत आवश्यकतायें है। हवा व पानी की तरह वन भी जीवन के लिए आवश्यक है। वन से हमें आक्सीजन मिलता है जो जीवन के लिए मूलभूत आवश्यकता है। पोस्टर देखिये कि किस प्रकार एक वृक्ष सांस लेने के लिए लोगों को आक्सीजन उपलब्ध करा रहा है। चूंकि जीवन की जरूरतों को जीवन विज्ञान में पढ़ा जाता है अतः इस पोस्टर को जीवन विज्ञान से जोड़ा जा सकता है।

हवा, पानी वन जीवन है

इन दो पोस्टरों के अलावा वन अवधारणा से संबंधित कई पोस्टर तैयार किया जा सकता है जिसका क्रियात्मक संबंध अन्य अध्ययन क्षेत्रों के विषयों से होगा।

टिप्पणी

C : क्रियाकलाप आधारित अधिगम दत्तकार्य

शिक्षार्थियों के लिए कई प्रकार के दत्तकार्य नीचे दिया गया है इन कार्यों को पूरा करने के लिए अध्यापक, शिक्षार्थी को इस प्रकार निर्देशित करेगा।

प्रिय शिक्षार्थी–नीचे आपके लिए कुछ रूचिकार कार्य दिया गया है इसे पूरा करके कक्षा में प्रस्तुतीकरण करने हेतु उन्हें जमा कराइये।

1) वन अवधारणा से संबंधित पोस्टर तैयार कीजिये जिसका क्रियात्मक संबंध गणित, भाषा और सामान्य विज्ञान विषयों से हो।

2) 'आपदा' सामाजिक विज्ञान की एक अवधारणा है, इस अवधारणा को 'विधी' राजनीति विज्ञान, गणित, स्वास्थ्य व स्वच्छता तथा अर्थशास्त्र से किस प्रकार जोड़ा जा सकता है व्याख्या कीजिये।

3) गणित की अवधारणा 'प्रतिशत' को लीजिये, इस अवधारणा को कोई छः विषयों से जोड़िये तथा उचित उदाहरण के साथ इस संबंध को स्पष्ट करें।

4) कक्षा vii की भूगोल, इतिहास, सामाजिक और राजनीतिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक को पढ़िये। इन तीनों पाठ्यपुस्तकों के 30 या 40 उभयनिष्ठ सामान्य अवधारणाओं को सूचीबद्ध करें।

प्रगति जाँच-5

- इतिहास विषय के अंतर्विषयक प्रकृति की व्याख्या करें?

(**नोटः** अपना उत्तर नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर लीखिये और इसे इस इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से तुलना करें)

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 सारांश

इस इकाई में आपको सामाजिक विज्ञान के प्रकृति से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। इस इकाई में सामाजिक विज्ञान की प्रकृति को सैद्धान्तिक विचारों और व्याख्या, व्यावहारिक

उदाहरणों और उद्धरणों, दत्तकार्यों और प्रोजेक्ट आदि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। यह इकाई मुख्यत: सामाजिक विज्ञान के आविर्भाव और धारणा संबंधी अधिगम, विभिन्न कालों में सामाजिक विज्ञान की स्थिति, वर्तमान समाज की स्थिति, सामाजिक विज्ञान के घटकों, और सामाजिक विज्ञान में अंतर्विषयक और एकीकृत परिप्रेक्ष्य से संबंधित अधिगम क्षेत्र को छूता है। इस इकाई के मुख्य अधिगम बिंदुओं को नीचे अंकित किया गया है।

सामाजिक विज्ञान ज्ञान की वह शाखा है जो मुख्यत: मानवीय संबंधों का अध्ययन करता है या बृहत सामाजिक पद्धति में मानवीय संबंधों का अध्ययन करता है। सामाजिक विज्ञान एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में (उच्च शिक्षा विश्वविद्यालय शिक्षा स्तर पर) 18वीं शताब्दी में हुए आधुनिक विज्ञान, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण आदि के विकास के फलस्वरूप उत्पन्न सामाजिक समस्याओं और चुनौतियों के प्रत्युत्तर में उभर कर सामने आया। सामाजिक विज्ञान के महत्त्व को समझते हुए प्रजातांत्रिक और सामाजिक नागरिक योग्यताओं का विकास युवा शिक्षार्थियों में करने हेतु पिछले शताब्दी में विश्व के सभी देशों में जिसमें हमारा देश भारत भी शामिल है, सामाजिक विज्ञान को विद्यालय पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है।

उच्च शिक्षा/माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषय जैसे इतिहास, राजनीति विज्ञान, मानवविज्ञान, आदि को स्वतंत्र या स्वैच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान को एकीकृत अध्ययन क्षेत्र के रूप में डिजाइन किया गया है और इसे सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम या सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के रूप में जाना जाता है।

सामाजिक विज्ञान का अधिगम समय का एक लम्बा रास्ता सभ्यता के आरंभ से आज तक तय किया है। प्राचीन और मध्यकालीन समाजों में, सामाजिक का अधिगम बहुत अनौपचारिक व अव्यवस्थित था, जबकि आधुनिक तथा पश्च आधुनिक समाजों में सामाजिक विज्ञान का अधिगम अधिक व्यवस्थित व औपचारिक है। हमारे देश में सामाजिक विज्ञान के अधिगम का प्रारंभ वैदिक और उपनिषदिक काल से हुआ और आज तक हमारे शिक्षा पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

विज्ञान और तकनीकि के शीघ्रता से विकास के कारण और वर्तमान समाज में औद्योगीकरण व आधुनिकीकरण के कारण, नये सामाजिक समस्यायें जैसे मजदूरों का शोषण, जनसंख्या समस्या, अपराधिक प्रवृत्तियां आदि की दिनों दिन वृद्धि हो रही है। इन नई सामाजिक समस्याओं का सामना करने के लिए कई नई सामाजिक विज्ञानों का उद्‌भव दिन प्रतिदिन हो रहा है। अपराध शास्त्र, जनसांख्यिकी विज्ञान आदि सामाजिक विज्ञान के कुछ नये क्षेत्र है।

सामाजिक विज्ञान एक अध्ययन विषय के रूप में एक बहुत बड़ी संख्या में कई विषयों को शामिल करता है जैसे राजनीति विज्ञान, मानवशास्त्र, कानून, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय एक एकीकृत पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता है और सामान्यतया तीन चार अनुदेशात्मक शीर्ष (उदाहरण स्वरूप इतिहास, भूगोल आदि) के अंतर्गत विषयवस्तु को व्यवस्थित किया गया है।

टिप्पणी

सामाजिक विज्ञान विषय अंतर्विषयक और अंतरनिर्भर प्रकृति का होता है ये स्वयं के साथ तथा अध्ययन के अन्य क्षेत्रों जैसे भौतिक शास्त्र, गणित, जीव विज्ञान आदि के साथ क्रियात्मक संबंध रखता है। इसलिए कक्षा में सामाजिक विज्ञान पढ़ाते समय इसे अन्य विषयों के साथ अवश्य जोड़ना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के बारे में अधिक विवरण अगले इकाई में आप सीखेंगे।

1.8 शब्दावली

नव जागरण–नव जागरण ज्ञानोदय से संबंध रखता है। 18वीं शताब्दी और इससे आगे के समय को नव जागरण काल कहा जाता है। इस अवधि में ज्ञान के उदय का प्रारंभ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, विज्ञान में हुआ। औद्योगीकरण, विज्ञान, आधुनिकीकरण आदि ने आधुनिक काल के नव जागरण में बहुत योगदान दिया है।

गांधीजी की आधारभूत शिक्षा–1937 में गांधीजी ने शिक्षा के एक योजना को अंतिमरूप दिया तथा उसे अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा गोष्ठी में, जिसका आयोजन 22 व 23 अक्टूबर 1937 को वर्धा में किया गया, प्रस्तुत किया। इस योजना को आधारभूत शिक्षा या वर्धा शिक्षा योजना के रूप में जाना जाता है। गांधीजी की आधारभूत शिक्षा योजना भारतीय बच्चों के आधारभूत आवश्यकताओं और आकांक्षाओं पर आधारित है।

आर्थिक अवमूल्यन–आर्थिक अवमूल्यन वित्तीय असफलता या आर्थिक मशीनरी के विघटन से संबंध रखता है। जब आर्थिक अवमूल्यन घटित होता है तब आर्थिक संस्थायें जैसे सामानों का उत्पादन और सेवायें, सामानों व सेवाओं का बाजारीकरण मंदी और महँगाई का नियंत्रीकरण आदि असफल हो जाता है 1930 को आर्थिक अवमूल्यन का सबसे बड़ा काल माना जाता है क्योंकि इस समय दुनिया के अधिकांश हिस्से इससे प्रभावित थे।

1.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

Braker, E (1967). Principles of Social and Political theery. Oxford: Oxford University Press.

Basantia, T.K., & Purkayastha, B. (2010). Comptency Based Teaching Learning Learing Process at Primary level: An Analysis. In K.D. Gaur, R Prasad and H. Bergal (Eds.).

Globalization and Economy. New Delhi: Sunrise Publication Basantia T.K. (2003). Effect of Activity Based Joyful learning Approach in Achieving Interdisciplinary MLL Competencies through teaching of environmental studies at Primary level, M. Phil. Education. Utkal University.

Basantia, T.K. (2006). Effect of Multi-Dimensional Activity based Integrated Approach in Enhansing cognitive and creative Abilities in Social Studies of Elementray school children, Ph.d. Education. Utkal university.

Coombs, P.H. (1985). The world crisis in education. New York. Oxford University Press.

Delors, J. (1996). Learning the Teasure within Report to UNESCO of the International Commision as Education for twenty first century. UNESCO.

Govt. of India (1952-53). Secondary Education Commission (1952-53). New Delhi: Ministry of Education.

Govt. of India (1966). The Education Commission (1964-66). New Delhi: Ministry of Education.

Govt. of India (1986). National Policy on Education (1986). New Delhi: MHRD

Jarolimek, J. (1962). Social Studies in Elementry Education. New York: The Mac Millan Company.

Mishra, S., & Basantia, T.K. (2003). The Modalities of Teachers empowerment for organizing creative activities for Development of various abilities in Elementary School Children. The Primary Teacher, 28(4), 43-47.

NCERT (1975). The curriculum for Ten year School: A framework. New Delhi: NCERT.

NCERT. (1988). National Curriculum for Elementary and Secondary Education. New Delhi: NCERT.

NCERT. (2006): Position Paper–National focus Group on teaching of social sciences. New Delhi: NCERT.

NCERT. (2000): National Curriculum framework for school Education. New Delhi: NCERT.

NCERT. (2005): National Curriculum frame work-2005. New Delhi: NCERT.

Panda, B.H., & Basantia, T.K. (2006). Civic awareness: A recurring challenge of Present day Education-Educational strategies for its Enhancement. The social science International, 22(1), 84-96.

Ross, D. (1991). The origin of American Social Science. New York: Cambridge University Press.

Traill, R.D., Logan, L.M., & Remmington, G.T. (1968).

Teaching the Social Sciences: A creative Direction.

Sidney: McGraw-Hill Company.

1.10 प्रगति जांच के उत्तर

प्रश्न 1 का उत्तर–सामाजिक विज्ञान शिक्षण (2006) पर गठित राष्ट्रीय अभिकेंद्रित समूह के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य निम्न है–

टिप्पणी

- पृथ्वी को मानव तथा अन्य प्राणियों के निवासस्थल के रूप में समझ को विकसित करना।
- शिक्षार्थी को उसी के क्षेत्र, राज्य और देश में अध्ययन करने की शुरुआत करना।
- शिक्षार्थी को भारत के इतिहास के बारे में अध्ययन की शुरुआत, आधुनिक व वर्तमान काल में विश्व के अन्य भागों में हुए विकास के संदर्भ में करना।
- शिक्षार्थी को देश की सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं के क्रियाकलापों और प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

प्रश्न 2 का उत्तर–सामाजिक विज्ञान अधिगम का प्राचीन भारतीय संस्कृति/शिक्षा पद्धति में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अध्यात्मिकता, नैतिकता सामाजिक गुणों और वृत्तियां आदि प्राचीन भारत के पथप्रदर्शक सिद्धांत थे। वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ऐसे भारतीय ग्रंथ है जो पूर्व-ऐतिहासिक/ऐतिहासिक समय से सामाजिक गुणों, और स्वस्थ्य जीवन जीने के सिद्धांतों से पूर्ण है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, विष्णु शर्मा के पंचतंत्र आदि कुछ ऐसे भारतीय रचनायें है जिसमें सामाजिक नितियों और सिद्धान्तों के बारे में विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इन सबको ध्यान में रखते हुए हम कह सकते है कि प्राचीन भारत में सांस्कृतिक/शिक्षा पद्धति में सामाजिक विज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रश्न 3 का उत्तर–वर्तमान समाज में बहुत तेजी से परिवर्तन दिन प्रतिदिन हो रहा है मुख्य कारण, विज्ञान व तकनीक, उच्च संचार माध्यम, इंटरनेट आदि का व्यापक उपलब्धता तथा विकास है इससे समाज प्रभावित हो रहा है तथा हर दिन नई सामाजिक समस्यायें उत्पन्न हो रही है।

इन नई सामाजिक समस्याओं को कम करने के लिए उसी के अनुसार नये सामाजिक विज्ञान का उद्‌भव हो रहा है तथा शिक्षा पद्धति का हिस्सा बन रहा है। 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में सामाजिक विज्ञान विषय जैसे सामाजिक कार्य, लोक प्रशासन, अपराध शास्त्र, मनोविज्ञान, और जनसांख्यिकी विज्ञान आदि का अस्तित्व लगभग नहीं था, परन्तु पिछले तथा वर्तमान शताब्दियों मं इन विषयों की महत्ता अत्यधिक बढ़ गई है क्योंकि इससे संबंधित सामाजिक समस्याओं में पिछले तथा वर्तमान शताब्दियों में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए 18वीं शताब्दी तथा 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में जनसंख्या वृद्धि कोई बड़ी सामाजिक मुद्‌दा नहीं था। परन्तु पिछले तथा वर्तमान शताब्दियों में जनसंख्या वृद्धि के कारण कई सामाजिक समस्यायें उत्पन्न हो गई है जिसके जनसांख्यिकी विज्ञान विषय का उदय हुआ और शिक्षा पद्धति का अहम हिस्सा बन गया है। इसी प्रकार अन्य सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु नये सामाजिक विज्ञान का दिन प्रतिदिन उदय हो रहा है।

प्रश्न 4 का उत्तर–तीन स्थितियां जो एक अध्ययन क्षेत्र की विशेषतायें बताती है–

1) एक क्षेत्र में कई व्यक्तिगत विषयों का समावेश होना आवश्यक है

2) एक क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न विषयों के बीच क्रियात्मक संबंध और अंतर होना चाहिए।

3) विभिन्न क्षेत्र या विभिन्न क्षेत्रों के विषयों के मध्य क्रियात्मक संबंध व अंतर होना चाहिए।

पांच विषय जिनको सामाजिक विज्ञान का हिस्सा माना जाता है वे है–राजनीति विज्ञान, भूगोल, विधी, समाजशास्त्र, और इतिहास प्रश्न 5 के उत्तर–इतिहास की प्रकृति अन्तर्विषयक है। यह इसलिए है क्योंकि जब हम इतिहास का अध्ययन करते है तो हम सामाजिक विज्ञान के कई विषयों के इतिहास का अध्ययन करते है जैसे राजनीति का इतिहास, अर्थशास्त्र का इतिहास, मनोविज्ञान का इतिहास, समाजशास्त्र का इतिहास, धार्मिक इतिहास आदि इसके अलावा अन्य अध्ययन क्षेत्रों के इतिहास जैसे भौतिक शास्त्र का इतिहास, रसायन शास्त्र का इतिहास वनस्पति विज्ञान का इतिहास, गणित का इतिहास, भाषा का इतिहास का अध्ययन भी इतिहास का हिस्सा है।

1.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. तीन बोर्ड, CBSE, ICSE और आपके राज्य के बोर्ड के किसी एक कक्षा की सामाजिक विज्ञान का पाठ्यपुस्तक ले। इन तीनों बोर्ड के पाठ्यक्रमों में क्या समानतायें तथा भिन्नतायें है ढूंढ़िये। इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के विषयवस्तुओं के मध्य समानता बनाने के लिए सुझाव दीजिये।

2. प्राथमिक कक्षा के सामाजिक विज्ञान के अवधारणा को चुनकर एक पाठ योजना तैयार करे तथा उसे अंतर्विषयक और एकीकृत उपागम शिक्षण–अधिगम पद्धति से विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए रूपरेखा तैयार करे।

3. 21वीं सदी के पूर्वार्ध से अंत तक कई नयी सामाजिक समस्यायें जनजीवन को प्रभावित कर सकती है ऐसे कुछ समस्याओं की एक सूची बनाइये जिसका अनुभव आप आने वाले समय में कर सकते है। इन समस्याओं के समाधान की योजना तैयार करें।

टिप्पणी

इकाई-2 विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान

सरंचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 अधिगम उद्देश्य

2.2 सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले कारक

2.2.1 औपनिवेशिक परम्पराएं और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

2.2.2 स्वातन्त्रयोत्तर सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या का विकास

2.2.3 राष्ट्रीय एकीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय समझ

2.2.4 धर्मनिरपेक्षता एवं साम्प्रदायिकता

2.2.5 सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर उपाश्रित परिप्रेक्ष्य का प्रभाव

2.2.6 लिंग, जाति तथा जनजातीय परिप्रेक्ष्य

2.2.7 अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या

2.2.8 सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में राष्ट्र स्तरीय आधुनिक विचारधारा और व्यवहार

2.3 सारांश

2.4 प्रगति जाँच के उत्तर

2.5 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.6 अन्त्य इकाई अभ्यास

2.0 प्रस्तावना

इकाई-1 में, आपने सामाजिक विज्ञान की प्रकृति के बारे में पढ़ा और एक विषय के रूप में इसकी अवधारणा एवं विकास की जानकारी प्राप्त की। आपने समाज की वर्तमान स्थिति के बारे में भी अध्ययन किया। क्या आपने कभी सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के वर्तमान रूप के संबंध में विचार किया है? वर्तमान रूप में पाठ्यचर्या का विकास कैसे हुआ? सामाजिक विज्ञान में पाठ्यवस्तु का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है और विद्यार्थियों द्वारा अधिगम की जाने वाली पाठ्यवस्तु का चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह विद्यार्थियों के विकास को प्रभावित करती है। स्पष्ट है कि, पाठ्यवस्तु का चयन शिक्षा के लक्ष्यों और सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों के आधार पर होता है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के निर्माण में क्या होना चाहिए,

इस का निर्णय कौन करता है? घटकों, विचारों और परिप्रेक्ष्यों की सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या निर्माण में क्या भूमिका है? इन वस्तु बिन्दुओं की समझ आपको सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या को बेहतर ढंग से समझने तथा विद्यालय में कार्य सम्पादन करने में सहायता प्रदान करेगी।

सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान आदि विषयों से लिए गए विविध शीर्षकों को सम्मिलित किया जाता हैं। इस इकाई में, हम उन घटकों की जिन्होंने इस विषय को प्रभावित किया है, तथा प्रभावों के परिणामों की चर्चा भारत में सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के संदर्भ में करेंगे। हम इस का भी परीक्षण करेंगे कि क्या ये घटक सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य में भी परिवर्तन करते हैं।

2.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- उन कारकों की पहचान कर सकेंगे जो सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर प्रभाव डालने वाली औपनिवेशिक परम्पराओं की चर्चा कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में राष्ट्रवादी प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर राष्ट्रीय एकीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय समझ (विश्व-बंधुत्व) के आदर्श के प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।
- धर्म निरपेक्ष साम्प्रदायिक सोच के सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे।
- सार्वजिक समानता के प्रभाव का सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के परिप्रेक्ष्य में वर्णन कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर लिंग जाति और जनजातीय प्ररिप्रेक्ष्य के प्रभाव का उदाहरण दे सकेंगे।
- वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के समाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।
- राष्ट्र स्तरीय आधुनिक विचारधाराओं और व्यवहारों के सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

2.2 सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले कारक

विभिन्न घटकों विचारों एवं विचारधाराओं, और घटनाक्रमों, आन्दोलनों और क्रान्तियों, विवादों और संबंधों, पर्यावरण और संसाधनों ने किया है।

भारत में 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक विज्ञान एक

स्वतंत्र विषय नहीं था। औपनिवेशिक शासकों ने इस प्रकार पाठ्यक्रम का निर्माण किया कि जो उन्हें, अंग्रेजों को तथा कुछ भारतीयों को भारत और इसके लोगों की कार्यप्रणाली का ज्ञान प्रदान कर सके, जिससे कि वो लोग औपनिवेशिक सरकार में कुशल अधिकारी और लिपिक बन सकें।

अंततोगत्वा, राष्ट्रवादी विचारधाराओं और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आदर्श और नीतियों, और प्रजातांत्रिक भारत के संविधान में स्थापित मूल्यों ने सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के निर्माण में निर्णयों को प्रभावित किया। भारत की विशाल विविधताओं से परिपूर्ण जनसंख्या, उनका विकास और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, सामाजिक परिवर्तनों और विवादों ने भी इस विषय पर अपनी छाप डाली है। भारत का पर्यावरण, संसाधनों, राजनीति, शाक्ति संघर्ष, मानवाधिकारों की दृष्टि से विश्व में स्थान भी सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आते हैं। राष्ट्र ने कई उभरती समस्याओं जनसंख्या विस्फोट, गरीबी, असमानता, शोषण, विकास और समावेशन, आदि का सामना किया है। ये सभी सरोकार भी सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में क्या पढ़ा और पढ़ाया जाता है को प्रभावित करते हैं।

2.2.1 औपनिवेशिक परम्परायें और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यः-

भारत में औपनिवेशिक काल ने सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के विकास में बहुत योगदान दिया है। यही समय था जब सामाजिक विज्ञान एक अलग विषय के रूप में उभरने लगा और इसकी पाठ्य वस्तु चयनित होती थी। इतिहास लेखन की परम्परा भारत में अधिक पुरानी नहीं है। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि ये अंग्रेज ही थे जिन्होंने प्रथम बार भारत का इतिहास लिखा। औपनिवेशिक शासकों ने ही विभिन्न आधुनिक वैज्ञानिक सर्वेक्षणों और जनगणनाओं से आंकड़े एकत्रित कर भारत की लम्बाई और चौड़ाई की माप की। इस सब ने उन सभी तथ्यों, आंकड़ों तथा आरेखों की शुरूआत की जो स्वयं भारत तथा अन्य विश्व के लिये इससे पहले अज्ञात थे। भारत और इसके लोग एक नये प्रकाश के नीचे चमके। औपनिवेशिक शासकों ने स्वयं को अपरिहार्य रूप से इस देश के लिए लाभकारी सभ्य शासक के रूप में प्रस्तुत करने के प्रयोजन और उनकी निजी मंशा के साथ इस समृद्ध ज्ञान को मिश्रित कर, सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के लिए विषय वस्तु का संयोजन तैयार किया।

आपने सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में अवश्य पढ़ा होगा। सिंधु घाटी सभ्यता का पल्लवन भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में लगभग 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसापूर्व में हुआ, और यह ही भारत में प्रथम प्रमुख सभ्यता के रूप में स्वीकार की जाती हैं यह प्राचीन सभ्यता उन्नत तकनीकी और जटिल नगरीय संस्कृति से युक्त थी। आधुनिक विश्व ने सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में प्रथम बार सन् 1826 ई. में जाना जब अंग्रेजी (ब्रिटिश) सेना का भगोड़ा चार्ल्स मैसन संयोगवश एक पुराने खंडहर बन चुके नगर की बड़ी शिला से जा टकराया जो कि आज कल हड़प्पा के पास है। जिस से पुरातत्व विदों को इसका नाम मिला। 1856 से 1872 के मध्य, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के निदेशक सर अलेंक्जेन्डर कनिंघम, ने हड़प्पा स्थल के समीप कुछ खुदाई का कार्य किया। आस-पास रहने वाले लोगों ने खुदाई स्थल से प्राप्त शिलाओं का अपने भवन निर्माण में पुनः प्रयोग कर लिया। 1865 में कराची-लाहौर रेलमार्ग निर्माण के लिये भी इसी स्थान की शिलाओं का प्रयोग हुआ। 1914 में, सर जॉन मार्शल जो कि भारतीय

पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के निदेशक थे, ने सर्वेक्षण में एक जलरोधी हौज और अनाज भंडारण का बर्तन पाया। आर.डी.बनर्जी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के एक अधिकारी ने प्रथम बार 1921–1922 में मोहन जोदड़ो की खोज की। इस प्रकार हमें भारत के प्राचीन महान इतिहास के बारे में पता चलता है।

भारतीय इतिहास से एक उदाहरण और लेते हैं। विश्व इतिहास में अशोक महान को एक अनुकरणीय शासक के रूप में माना जाता है। ब्रिटिश इतिहासकार एच.जी. वैल्स लिखते हैं ''इतिहास के दसियों हजारों राजाओ के नाम के मध्य अशोक महान का नाम एक सितारे की तरह चमकता है।'' लेकिन अशोक और उस के कार्यों को उसकी पौराणिक कथाओं से ही जाना जाता है, जो कि बौद्ध साहित्य में मिलती हैं, इन साहित्यों में ऐतिहासिक यथार्थ तथा निश्चितता का अभाव मिलता है। 1837 में जेम्स प्रिंसेप को दिल्ली में मिल शिला स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख को समझने में सफलता मिली। प्रिंसेप को मिली सफलता से अन्य शिलालेखों के पठन में रूचि बड़ी। ये उत्कीर्ण लेख पूरे भारत और पाकिस्तान अफगानिस्तान और नेपाल में फैल गये, ऐसा प्रतीत होता था जैसे शिलालेखों की एक शृंखला किसी राजा द्वारा जो स्वयं को ''ईश्वर का प्रिय, राजा पियादासी'' कहता है जारी कर दी गई हो।

1915 में खोजे गए एक अन्य शिलालेख से इस ''ईश्वर का प्यारा, राजा पियादासी'' की पहचान राजा अशोक के रूप में स्पष्ट हुयी। इन निर्वाहित पुरातात्विक और ऐतिहासिक प्रयासों के कारण ही हमें अशोक के भव्य जीवन की उपलब्धियों और गुणों के बारे में पता लगा। ये तथा इसी प्रकार की कुछ अन्य खोजों जो कि औपनिवेशिक काल में ही हुयी ने भारतीय इतिहास के प्रत्यक्ष ज्ञान में परिवर्तन कर दिया था। उपरोक्त दो उदाहरणों से आप क्या सार ग्रहण करते हैं?

बहुत थोड़े **ब्रिटिश शासको और अधिकारियों ने भारतीय इतिहास लेखन का सचेत प्रयास किया।** 1784, में, वारेन हेस्टिंग्स ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक अधिकारी सर विलियम जॉन्स की नियुक्ति कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में की, और उन्हें भारत का इतिहास लिखने का आदेश दिया। विलियम जॉन्स जो कि बौद्धिक कौशल के लिये उल्लेखनीय थे, ने तुरंत एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की नींव रखी और इस के हेतु भारतीय इतिहास लेखन के कार्य में लग गए। विलियम जॉन्स लोगों के उत्साह और समर्थन से अपने प्रयासों में आगे बढ़ते रहे। उन के प्रयास की पराकाष्ठा 1788 में एशियाटिक रिसर्चस नामक आवधिक पत्रिका में प्रकाशित होने लगी। यह पत्रिका सोसायटी द्वारा की जाने वाली भारतीय पुरातात्विक सम्पदा संबंधी अनुसंधान एवं सर्वेक्षण रिपोर्टों को प्रकाशित कर लोगों को जागरूक बनाती थी। इन सतत अध्ययन संबंधी कार्यों से शीघ्र ही कई पुरावस्तुएं एवं अवशेष प्रकाश में लाये गये। बाद में ऐसी ही सोसायटी का गठन बॉम्बे (मुम्बई) और मद्रास (चैन्नई) में भी हुआ। 1833 में, जेम्स प्रिंस एशियाटिक सोसायटी के सचिव बने। उनकी सर्वाधिक उपलब्धि पूर्ण घटना 1834 से 1837 के मध्य ब्रह्मी और खरोष्ट्री लेखों का अनुवाचन और पियादासी की पहचान राजा अशोक के रूप में होना रही। **एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल भारतीय इतिहासके पुनर्निर्माण में योगदान आज भली प्रकार जाना जाता है।** औपनिवेशिक काल को, भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक कई पुरातात्विक अवशेषों को खोजने और समझने के प्रयासों के रूप में भी देखा जाता है।

टिप्पणी

जब बंगाल इंजीनियर्स के सैकंड लेफ्टीनेंट, कनिंघम, की नियुक्ति प्रथम पुरातत्व सर्वेक्षक के रूप में दिसम्बर 1816 से हुयी, तब उन के द्वारा पूर्ण रूप से पुरातात्विक सर्वेक्षण की सुविधायें प्रदान की गयी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण बाद में एक पृथक सरकारी विभाग बन गया और **भारत में पुरातात्विक सर्वेक्षण और संरक्षण क्रियाकलापों** का नेतृत्व करने लगा।

भारत के प्रथम लिखित विस्तृत इतिहास का श्रेय जेम्स मिल को दिया जाता है, यद्यपि उन्होंने कभी भारत भ्रमण नहीं किया था, जिसने इतिहास लेखन के कार्य में उन्हें विचारों में अधिक निष्पक्ष बनाया। उन्होंने अपने कार्य को 1806 में प्रारंभ कर ''द हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया'' को 1818 में प्रकाशित कर पूर्ण किया। अन्य कई ब्रिटिश प्रशासनिकों और सैन्य अधिकारियों द्वारा भी भारतीय इतिहास लेखन के प्रयास किये गये। उन में से कुछ हैं- मेजर जनरल जॉन मैल्कम (ए मैमोअर ऑफ द सेन्ट्रल इंडिया, 1824); कैप्टन ग्रान्ट डफ (हिस्ट्री ऑफ मराठाज, 1826); जनरल ब्रिग्स (हिस्टी ऑफ द राइज ऑफ मोहम्डन पॉवर इन इंडिया, 1829); माउन्ट स्टूअर्ट एल्फिन्स्टोन (हिस्ट्री ऑफ इंडिया 1841); और जोसेफ कनिंघम (हिस्ट्री ऑफ सिख्स, 1849) ये पुस्तकें जल्दी ही आम आदमी के लिये भारत और विदेश दोनों में भारतीय इतिहास के ज्ञान और सूचना के मानक स्रोत के रूप में स्थापित हो गयीं। जब देश में अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था की शुरूआत हुयी, तब सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में ब्रिटिश लेखकों द्वारा लिखित भारतीय इतिहास का ही प्रयोग किया गया।

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने 1767 में सर्वे ऑफ इंडिया की स्थापना देश के खंड-खंड की खोज और मापन करने का कार्य सैन्य कार्यवाही तथा नागरिक उद्देश्यों की पूर्ति करने के उद्देश्य से की। ये सर्वेक्षण भारतीय भूमि और संसाधनों की सूचना के समृद्ध स्रोत बन गये। ये सूचनायें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, व्यापारिक और वाणिज्यिक, प्रशासनिक, विकास योजनाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण स्रोत बनीं। देश के सर्वेक्षण से उत्सर्जित ज्ञान और सूचनाओं ने जमीन और इसके लोगों के प्रति एक नवीन समझ प्रदान की। **क्या आप ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत के सर्वेक्षण कार्य को रखने के उद्देश्य का अनुमान लगा सकते हैं?** आज सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या का उद्देश्य विद्यार्थी को जिस स्थान पर वे रहते हैं- उस भारत की भूमि और इसके लोगों, इसकी नदियों, पर्वतों, वनों, कृषियों, आर्थिक परिस्थितियों, जनसंख्या, धर्मों, सरकार और अन्य कई विशेषताओं को समझ सकें। अब ये सभी ज्ञान और समझ के क्षेत्र सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के अंग हैं, जो विभिन्न विषय अनुशासनों यथा इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि के रूप में उपलब्ध हैं।

आप जानते ही हैं कि भारत विभिन्नताओं से समृद्ध लोगों का घर है। भारत की जनगणना भारतीय लोगों देश में रहने वाले लोगों की संख्या, लिंग अनुपात, साक्षरता और अन्य कई विशेषताओं के बारे में सूचनाओं का एक मात्र बहुमूल्य स्रोत है। ऐसी सूचनायें हमारे समाज की समझ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। क्या आपने कभी जनगणना परिणामों का विशलेषण किया है? जनगणना ने भारतीय समाज को जानने और समझने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सर्व प्रथम जनगणना ब्रिटिश सरकार द्वारा 1872 में करवाई गई थी। अगली 1881 में हुई थी और उसके प्रत्येक 10 वर्ष बाद नियमित रूप से जनगणना होती है। इस उत्तरोत्तर होने वाली जनगणना क्रियाकलाप से उत्पन्न ज्ञान, सूचनाओं और समझ से प्राप्त महत्वपूर्ण आगत से सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या प्रभावित होती है।

1835 में अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था की प्रस्तुति ने भारतीय विद्यार्थियों को पाश्चात्य विज्ञान और तकनीकी के अध्ययन के योग्य बनाया और उन्हें प्रकृति और समाज अध्ययन के लिये कठिन विधियों को अपनाने हेतु प्रस्तुत किया। 1854 में वुड डिस्पैच ने देश में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के ढाँचे को विस्तृत प्रशासनिक प्रावधानों और विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक प्रबन्ध के साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली की संरचना निर्माण का प्रयास किया। 1857 में एक के बाद एक शीघ्र ही प्रथम तीन बॉम्बे (मुंबई), कलकत्ता (कोलकाता) और मद्रास (चैन्नई) विश्व विद्यालयों की स्थापना हुयी। प्रशासनिक तंत्र की स्थापना, नवीन संचार एवं यातायात के साधनों जैसे रेलवे एवं तार घर के प्रारंभ होने का उत्तरदायित्व भी ब्रिटिश सरकार का ही था। विधि शासन की स्थापना और न्याय पालिका का कार्य पालिका से प्रथकरण, अन्य महत्वपूर्ण विकास थे। साथ ही साथ, सामाजिक सुधार कार्यों के माध्यम से बालिका शिक्षा तथा सती प्रथा के अन्त आदि भी कार्यों के प्रावधानों को भी शुरू किया गया। इस अवधि में, भारतीय संस्कृति और विरासत में रूचियों का भी नवीनीकरण हुआ। भारत की अनेक पवित्र और धर्म निरपेक्ष ज्ञान की पुस्तकों का यूरोपियन भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन हुआ जिन्होंने भारतीय सभ्यता पर नवीन प्रकाश डाला। फ्रैडरिक मैक्स मूलर, जर्मन मूल के, फ्रैडरिक मैक्समूलर, ने इस कार्य में मुख्य भूमिका का निर्वहन किया। उसने 'सैक्रेड बुक्स ऑफ ईस्ट' शीर्षक के अन्तर्गत एकश्रृंखला प्रकाशित की।

विभिन्न क्षेत्रों के विकास यथा पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, विरासत, भारतीय भूमि और प्राकृतिक संसाधनों के सर्वेक्षण, जनगणना, भारतीय प्रशासनिक परिवर्तन, शिक्षा, यातायात और संचार सामाजिक पुर्नरचना के कार्यों ने सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या और अध्ययन विधियों को प्रभावित किया।

राष्ट्रीय विकल्प

ब्रिटिश सरकार का उपरोक्त वर्णित क्रियाकलापों में व्यस्त होना देश के विकास का एक मात्र उद्देश्य नहीं था। इनमें से कई क्रियाकलाप भारत में ब्रिटिश शासन को न्यायोचित ठहराते हैं। औपनिवेशक शासक जातीय श्रेष्ठता की बहस से कहीं आगे बढ़ कर चिर स्थाई रूप से भारत में शासन को दृढ़ करने की बात सोच रहे थे। रडयार्ड किपलिंग द्वारा रचित 'व्हाइट मैन्स बर्डन'' में इस बात का उल्लेख कर साम्राज्यवाद को आदर्श उपक्रम के रूप में न्यायोचित बताने का प्रयास किया गया, कि श्वेत जाति को अन्य देशों के लाभ के लिये वहां उपनिवेश और शासन की स्थापना करनी चाहिये। भारतीय संस्कृति तथा समाज के महत्वहीन प्रदर्शन के सचेत प्रयासों को कई शिक्षित भारतीयों ने उल्लेख किया।

मैकाले ने लिखा: मुझे संस्कृत या अरबी का ज्ञान नहीं है। परन्तु मैंने उनके मूल्य का सही आकलन करने हेतु वही किया जो मैं कर सका। मैं ने सभी प्रसिद्ध अरबी और संस्कृत अनुवाद के कार्यों को पढ़ा है। मैने यहाँ और घर पर दोनों स्थानों में पूर्वी भाषाओं में प्रवीण युक्त विख्यात व्यक्तियों से वार्तालाप किया है। मैं एशियन (पूर्वी) भाषाओं को एशियन (पूर्वी) मानकों पर सीखने के लिये तैयार हूँ। मुझे उन सभी में से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो इस से असहमत हो कि एक अच्छी यूरोपियन पुस्तकालय के किसी भी एक कॉलम में रखी पुस्तकों का मूल्य भारतीय और अरबी साहित्य के बराबर हो। पाश्चात्य साहित्य की मौलिक वरिष्ठता को,

वास्तव में, समिति के केवल उन्हीं सदस्यों ने स्वीकार किया जो एशियन (पूर्वी) शिक्षा योजना (व्यवस्था) का समर्थन करते थे।

(मैकाले के वक्तव्य के अंश, 1835)

आप मैकाले के इस वक्तव्य के बारे में क्या सोचते हैं?

इतिहास लेखन में और सामाजिक धार्मिक रीति रिवाजों का वर्णन करने में कई ब्रिटिश लेखकों और प्रशासकों ने ब्रिटिश शासन को भारत के लिये हितकर बताने के लिये ब्रिटिश तथा यूरोपियन तौर तरीको की अनुमानित श्रेष्ठता तथा भारतीय संस्कृति तथा जीवन शैली में अतिश्योक्ति पूर्ण नकारात्मक तत्वों को थोपने का प्रयास किया। राष्ट्र प्रेमी भारतीय ऐसी स्थिति को कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते थे। उनकी इच्छा थी कि भारतीय अपना इतिहासस्वयं लिखें तथा अपनी संस्कृति का स्वयं वर्णन करें।

क्या आप सोच सकते हैं कि ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की जा सकती थी आप 1857 के विद्रोह की व्याख्या कैसे करोगे? क्या यह जैसा कि ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा वर्णित एक 'सैन्य विद्रोह' मात्र था? या फिर यह भारतीयों के द्वारा स्वतंत्रता के लिये प्रथम संग्राम था, जैसा कि राष्ट्रवादी इतिहासकारो द्वारा वर्णित है? आप अपने उत्तर के पक्ष में तर्क का उल्लेख कर सकते हैं।

भारतीय राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश तरीकों से भारतीय इतिहास की, सभ्यता, संस्कृति और विरासत की व्याख्या किये जाने पर प्रतिक्रिया की। उनके भारतीय आर्थिक हितों, राजनैतिक परिपक्वता और लोगों की अभिलाषा के संबंध में अलग विचार थे। स्वामी विवेकानंद भारत का इतिहास भारतीय दृष्टि से लिखे जाने के विचार पर बल देने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उन का मत है: अंग्रेजो द्वारा हमारे देश के बारे में लिखा गया इतिहास हमारे मस्तिष्क को कमजोर करने वाला सही हो सकता है, परन्तु क्योंकि वे केवल हमारा पतन ही बताते हैं। वह विदेशी जो हमारे रीति रिवाजों, हमारे धर्म और दर्शन, को बहुत थोड़ा जानता हैं, यथार्थ और निष्पक्ष होकर भारत का इतिहास कैसे लिख सकता है..अत: भारतीयों द्वारा ही भारतीय इतिहास लिखा जाना चाहिए।

राष्ट्रवादी यह महसूस करते हैं कि ब्रिटिश लेखक भारत में विदेशी घुसपैठ, सामाजिक व्यवस्था में नकारात्मक तत्वों जैसे वर्ण व्यवस्था, छुआछूत या अछूत प्रथा अभिजात्य वर्ग के बौद्धिक प्रपंच और संस्कृत के प्रयोग आदि का अनावश्यक रूप से अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन करते हैं। वे ऐसे विषयों जैसे कि भारतीयों ने घुसपैठ का किस प्रकार विरोध किया, निरन्तर होने वाले आक्रमणों का सामना करने की सामर्थ्य, सामाजिक व्यवस्था की शक्ति और जिजीविषा जो कि सहस्राब्दियों में अनेक परीक्षणों से गुजरी है, और सम्पूर्ण उपमहाद्वीप के करोड़ां लोगों द्वारा हजारों वर्षों से संभवत: सर्वप्रथम और सर्वोत्तम बोले जाने वाली संस्कृत भाषा की कार्यशीलता पर लिखन भूल जाते हैं। राष्ट्रवादी चाहते हैं कि वे राष्ट्रीय इतिहास के इन उद्देश्यों को ध्यान में रख कर लिखें-राष्ट्र की नैतिकता, मूल्यों और परम्पराओं पर पकड़ जो कि राष्ट्रीय छवि (प्रतीक) को प्रोत्साहित करे। बंकिम चन्द्र चटर्जी यद्यपि औपनिवेशी शासन में अधिकारी थे ने भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक पुनरूत्थान की पुरजोर वकालत की है। उनका ''वंदे मातरम'' पूरे भारतीय राष्ट्रवाद को एकत्रित कर देता है।

कई राष्ट्रवादी नेताओं ने सामाजिक विकास के कई वैकल्पिक प्रतिरूप प्रस्तुत किए। गोखले ने सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा की माँग की। बड़ौदा के महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ ने अपने राज्य में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रारंभ किया। महात्मा गाँधी ने शिक्षा की विस्तृत योजना-भारत के लिये-बुनियादी शिक्षा का निर्माण किया। अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने ऐसी शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिससे छात्र गर्व और आत्मविश्वास के साथ अपना भाग्य निर्माण कर सकें, और औपनिवेशक स्वामियों की ओर उन्हें न देखना पड़े, जो कि उन्हें यह सिखायें कि जीवन कैसे जीया जाता है। एक उद्देश्य स्पष्ट था-क्लर्क निर्माण करने वाली शिक्षा से हटकर एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना जिससे भारतीय बच्चे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ हो सके। स्वामी दयानन्द का दयानंद एंग्लो वैदिक आन्दोलन एक अन्य विकल्प था जिसने सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक सुधार का प्रयास किया। आर्य समाज और ब्रह्म समाज आन्दोलन भी सामाजिक धार्मिक सुधार का प्रयास कर रहे थे। इस के अतिरिक्त, बहुत से लोगों ने व्यक्तिगत रूप से भारतीय राष्ट्र प्रेम को केन्द्र में रखकर वैकल्पिक शिक्षा प्रदान की।

महात्मा गाँधी ने भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास एक नया आदर्श मॉडल प्रस्तुत किया। उन के द्वारा प्रस्तुत मॉडल में पाश्चात्य तरीकों और औद्योगीकरण को कोई स्थान नहीं दिया गया। उनकी स्वतंत्रता की अवधारणा के दायरे में आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता भी शामिल थी। उन का विचार था कि भारतीय ग्रामों को आत्मनिर्भर इकाई के रूप में परिवर्तित किया जाये जहाँ प्रत्येक व्यक्ति शोषण रहित गौरवशाली जीवन बिताने में सफल हो सके। जब स्वतंत्रता के लिये राष्ट्रीय आन्दोलन, जन आन्दोलन बन गया तब सामाजिक और आर्थिक राष्ट्रीयता की विचारधारा, राजनैतिक शक्ति और पूर्ण स्वतंत्रता की माँग के साथ एक मजबूत विकल्प बन गयी। राष्ट्रीयता की भावनाओं और विकल्पों के जोर ने सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर बड़ा प्रभाव डाला।

क्रियाकलाप -1

1. भारत के लोगों में जो विविधतायें आपने पायीं, उनकी सूची बनाइये।
2. भारतीयों के बीच विविधताओं की क्या चुनौतियाँ हैं? और क्या अवसर हैं?
3. अपने पंचायत ब्लॉक या ताल्लुक की जनगणना के आधुनिकतम आंकड़े एकत्र करें। आपको अपने क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या, अपने क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर की जानकारी मिलेगी। आप उनके समुदाय और धर्म जिससे वे संबंधित हैं, उनकी साक्षरता दर, लिंग अनुपात की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस क्रियाकलाप को करने के बाद अपने क्षेत्र के लोगों की स्थितियों/लक्षण का विश्लेषण लिखें।

टिप्पणी

प्रगति जाँच-1

1. भारतीय इतिहास को लिखने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था?

   .....

2. अशोक के शिलालेख को पढ़ सकने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था?

   .....

3. सर्वे ऑफ इंडिया की स्थापना क्यों की गई?

   .....

4. किस भारतीय शासक ने प्रथम बार अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की शुरूआत की?

   .....

2.2.2 सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या का स्वातंत्रयोत्तर विकास

स्वतंत्रता अपने साथ लायी उत्तरदायित्व-उत्तरदायित्व हमारे अपने कारोबार की व्यवस्था का, स्व-शासन का, नये प्रजातंत्र के आधार के लिये ज्ञान और कौशल की आवश्यकता के निर्माण का, और अपनी शिक्षा प्रणाली के रूपाकार का। भारत को दीर्घकाल के संघर्ष के उपरांत स्वतंत्रता प्राप्त हुयी। मूल्यों जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को निर्देशित किया तथा नवीन प्रजातंत्र के लिये आदर्शों, को भारतीय संविधान में अभिव्यक्ति प्राप्त हुयी। इन न्यायसंगत और समतावादी समाज और व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, न्याय और भाई चारे के नये आदर्शों का विरोध, सीधे, भारत के कई काफी समय पुराने वर्चस्व और अधीनता के कार्यकारी सम्बन्धों, जाति और लिंग संबंधी प्रत्यक्ष ज्ञान, और औपनिवेशिक अनुभवों से हुआ। भारतीय स्वतंत्रता दर्दनाक विभाजन के साथ आई, जो हिंसक दंगों और हजारों लोगों के नरसंहार की साक्षी थी। इससे पहले से ही कमजोर साम्प्रदायिक संबंधों पर बड़ा दाग लगा।

इन शक्तियों का सामना करते हुये भारत ने यह निश्चय किया कि वह अपने बच्चों के मन में देश की प्रजातांत्रिक कार्य प्रणाली के लिये आवश्यक कौशल, नेतृत्व क्षमताओं का विकास और नयी सामाजिक व्यवस्था का बीजरोपण करे।

विश्वविद्यालयी शिक्षा आयोग (1948-49), जिस का गठन स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात हुआ ने सिफारिश की, कि शिक्षा को छात्रों को समाज के दर्शन से अवगत कराना चाहिये जो कि सभी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक संस्थाओं को शासित करता है। प्रजातंत्र के लिये प्रशिक्षण, छात्रों का सामाजिक सांस्कृतिक विरासत से परिचय कराने और उनकी भूतकाल तथा वर्तमान काल की समझ को विकसित करने की सिफारिश आयोग द्वारा की गई। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने भी बारम्बार समान मूल्यों, प्रजातांत्रिक नागरिकता और नेतृत्व की बात कही। भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने शैक्षिक क्रान्ति की आवश्यकता को महसूस

टिप्पणी

किया-शिक्षा को जीवन, आवश्यकताओं और राष्ट्रीय अभिलाषाओं से संबंध करने के लिये एक आंतरिक परिवर्तन की आवश्यकता है। इस आयोग ने सामाजिक और राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत करने और सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में वृद्धि को शिक्षा का उद्देश्य बनाने की सिफारिश की।

भारत ने एक विस्तृत नई शिक्षा नीति का सूत्रपात 1986 में किया। यह नीति शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अभिलाषाओं और मूल्यों को प्रतिबिम्बित करती है। नीति घोषणा करती है: शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर आधारित होगी जिसके अन्तर्गत कुछ समान केन्द्रीय तत्व, अन्य कुछ लचीले तत्वों के साथ हों। समान केन्द्रीय तत्व भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन, संवैधानिक दायित्व तथा राष्ट्रीय पहचान के लिये अन्य आवश्यक पोषक विषय वस्तु शामिल होंगी। ये तत्व विषय क्षेत्र को पूर्ण रूप से भेदेंगे और मिली जुली भारतीय सांस्कृतिक विरासत, समतावादी, प्रजातांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष, लिंग की समानता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक अवरोधों का उन्मूलन, छोटे परिवार की रीति का पालन, वैज्ञानिक अभिवृत्ति में वृद्धि, को प्रचारित करेंगे। सभी शैक्षणिक कार्यक्रम दृढ़ निश्चयात्मक रूप से धर्म निरपेक्ष मूल्यों पर क्रियान्वित होंगे। ये केन्द्रीय मूल्य ही सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या की आशाओं को पूरा करने के लिये दिशा निर्धारित करेंगे।

स्वतंत्र भारत में सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या नियोजकों के समक्ष ध्यानाकर्षित करने वाले कई मुद्दे (विषय) रहे हैं। स्वतंत्र राष्ट के रूप में भारत ने कई समस्याओं का सामना किया उन में से कुछ गरीबी, निरक्षता, पिछड़ापन, साम्प्रदायिक विभाजन थे। इन समस्याओं से जूझना राष्ट्रीय प्राथमिकता बनी। अधिक अन्न उत्पादन, निरक्षरता उन्मूलन, जनसंख्या वृद्धि की विस्फोटक स्थिति, आन्तरिक और बाहरी अलगाववादी ताकतों का सामना करते हुए समूचे राष्ट्र को एक साथ खड़ा रखना साथ ही अपने प्रजातांत्रिक तथा संवैधानिक विचारों का समान रूप से पल्लवन। इन सभी मुद्दों ने, इस प्रकार सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में अपना मार्ग बनाया और विद्यार्थियों को जिस समाज में वे रहते हैं के सरोकारों के प्रति सही ढंग से संवेदित किया गया।

2.2.3 राष्ट्रीय एकीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय समझ

भारतीय समाज की समृद्धि इसकी बहुलता में है। लेकिन बहुलता अपने साथ भारतीयों में भावनात्मक एकीकरण को प्राप्त करने की चुनौती भी लाती है इसके लोगों की विविधता जो विभिन्न भाषायें बोलते हैं, भिन्न प्रकार की वेशभूषा पहनते हैं, भिन्न स्थानों में भिन्न प्रकार से पूजा करते हैं, भिन्न विचारधाराओं का प्रदर्शन करते हैं, भिन्न सम्प्रदायों से संबंध रखते हैं, भिन्न रूचियाँ रखते हैं और जिनकी आमदनी में विशाल अन्तर है। भारतीय नागरिकों में एकता की भावना का प्रोत्साहन राष्ट्र का, परिणामत:, शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। भावनात्मक एकीकरण और राष्ट्रीय एकता से संबंधित पर्याप्त कहानियां भारतीय इतिहास में है। बहुमूल्य स्वतंत्रता और एकता की क्षति नहीं हो सकती। विभाजित भारत को जीतना विदेशी ताकतों के लिये सदा ही सरल रहा है। भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने सामाजिक और राष्ट्रीय एकीकरण को शिक्षा के मुख्य उद्देश्य के रूप में ग्रहण किया था।

टिप्पणी

यद्यपि सामाजिक और भावनात्मक एकीकरण को मजबूत करना महत्वपूर्ण है, भारतीय नागरिकों में भावनात्मक एकीकरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। एकता और साहचर्य की भावना तब ही आता है जब लोगों के यह महसूस हो कि वे महत्वपूर्ण हैं और उनकी आवाज भी किसी सम्प्रदाय, विचारधारा या आय संबंधी भेद विचार किये बिना सुनी जाती है। राष्ट्रीय विषयों से कि भागीदारी का बोध लोगों को परिधि से केन्द्र की ओर लाता है। क्या आप सोचते है सामाजिक आर्थिक और विकासात्मक समावेशन का, एकता और साहचर्य की भावना के साथ कोई संबंध हो सकता है? क्या उनके महत्वपूर्ण निहितार्थ हम लोगों के कमजोर और पिछड़े वर्ग के लिये हैं?

वर्तमान में राष्ट्रीय एकता के लिये क्या आशंकायें हैं? क्या आप सोचते हैं कि राष्ट्र के भीतर ही कुछ ताकते हैं जो लोगों में एकता की भावना को कमजोर करती हैं? वर्तमान में कई अलगाववादी समूह देश के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं। इन गलत मार्ग पर चलने वाले समूहों के प्रयोजन का दायरा निजी स्वार्थ पूर्ति से साम्प्रदायिक घृणा द्वारा विदेशी हितों की पूर्ति करना हो सकता है। ये ताकतें भारतीय समाज में कैंसर की तरह कार्य करती हैं, और इसलिये, इन्हें पहचान कर नियंत्रित करना आवश्यक है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, अलगाववाद, क्षेत्रवाद, आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलन, आय में भिन्नता, अमीर और गरीब के मध्य का निन्तर व्याप्त अन्तर और पीछे छूट जाने की भावना, इस के कुछ कारक हो सकते हैं। आप और भी कारक ढूँढ सकते हैं।

राष्ट्रीय एकीकरण को सशक्त करने कु लिये सामाजिक विज्ञान क्या कर सकता है? राष्ट्रीय एकता और अखंड़ता के बीजारोपण के लिये सामाजिक विज्ञान एक सशक्त विषय है। यह विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता के महत्व के प्रति संवेदित कर सकता है, मुद्दे को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान कर सकता है और राष्ट्रीय एकता के प्रतीकों का मूल्य समझ सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार सामूहिक सांस्कृतिक विरासत, भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये आंदोलनो का इतिहास, राष्ट्रीय पहचान निर्माण के लिये आवश्यक संवैधानिक दायित्व और इसकी विषय वस्तु विद्यार्थियों में सहचर्य की भावना का निर्माण करते हैं। राष्ट्रीय इतिहास तथा राष्ट्रीय भूगोल की शिक्षा छात्रों में देश से आत्मीयता की समझ का विकास करते हैं। सामाजिक विज्ञान को राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देने और छात्रों के बीच उसकी चर्चा कराने के, उत्तरदायित्व का निर्वाह करना चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय समझ की संकल्पना राष्ट्रीय अखंडता की संकल्पना से ही संबद्ध है। हम वैश्वीकरण के युग में जी रहे हैं। राष्ट्र और देश अलग-अलग हो कर नहीं रहते। आज कई विशाल समस्यायें जो राष्ट्रीय स्तर की नहीं हैं; उनके विश्व व्यापि आयाम है; उन का सामना समस्त मानवता और विश्व के देशो को करना पड़ रहा है। फलस्वरूप विश्व के सभी देशों और उनके लोगों द्वारा उन समस्याओं पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। क्या आप ऐसी समस्याओं की सूची बना सकते हैं? पर्यावरण संबंधी आशंकायें, व्यापार, वाणिज्य और आर्थिक मुद्दे, मानव विकस और जनसंख्या का मुद्दा, विश्व शान्ति आदि कुछ ऐसे ही क्षेत्र हैं। अन्तर्राष्ट्रीय समझ की कमी ने ही दुनिया को दो बार विश्व युद्ध की ओर धकेला है जिन का परिणाम भारी जनहानि, धन तथा मानवीय मूल्यों की क्षति के रूप में झेलना पड़ा। दुनिया के देशों और उनके सभी लोगों के सहयोग और समझ प्राप्ति के संबंध

टिप्पणी

में मानव जाति आत्मसंतुष्टि को वहन नहीं कर सकती। राष्ट्र विशेष के लिये मानवीय मूल्य तथा मानवीय विकास के मुद्दे छोड़ देना महत्वपूर्ण है।

सामाजिक विज्ञान में छात्रों के मस्तिष्क में ऐसे बेहतर विश्व, जिसमें लोग मानवता के समक्ष खड़ी चुनौतियों का मिलकर सामना करते हैं और अन्य दूसरे लोगों की परवाह करते हैं की स्थापना कर सकने की सार्म्थ्य है। विश्व भूगोल तथा विश्व इतिहास का शिक्षण छात्रों में सम्पूर्ण विश्व के साथ घनिष्ठता का बोध करा सकता है। वर्तमान पीढ़ी के लिये विश्व शान्ति के महत्व की सराहना, सहयोग, समझ, पारस्परिक आदर, भवनात्मक साझेदारी और सामूहिक प्रयास करने के विश्व इतिहास में पर्याप्त अध्याय हैं। दुनिया ने पहले से ही परस्पर विचार विमर्श और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिये मूलभूत अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का निर्माण किया हुआ है। छात्रों को इन अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के, तथा इनकी भूमिका के, बारे में जानकारी देने की आवश्यकता है। पर्यावरण, जनसंख्या, विकास, शिक्षा, आर्थिक लाभ एवं व्यापार और विभिन्न राष्ट्रों एवं लोगों के बीच सशस्त्र संघर्ष के संबंध में उभरती अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थिति की भी उन्हें जानकारी देने की आवश्यकता है। उन्हें उभरती हुयी चुनौतियों के समक्ष विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की पर्याप्तता के बारे में भी जानकारी ग्रहण करनी चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय समझ और राष्ट्रीय एकीकरण के सरोकार को सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में पर्याप्त (स्थान) मिलता है।

2.2.4 धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिकता

जब हम देश के विभिन्न धार्मिक अभ्यासों की बात करते हैं तो भारत की सांस्कृतिक विविध ता प्रमुखता से पुन: समक्ष आ खड़ी होती है। हमारे पास कई आस्थायें और साथ-साथ पल्लवित होने वाली विचारधाराओं की परम्परायें हैं। लोगों की सहनशीलता और समर्थन से इस देश में कई धार्मिक विश्वास पैदा और विकसित हुए हैं, और विश्व के अन्य भागों में भी फैल चुके हैं। इस भूमि पर अन्य कई आस्थायें अन्य क्षेत्रों से आयीं उन्होंने भी यहाँ पर स्थान एवं मान्यता प्राप्त की। साथ-साथ रहने की इस देश में समृद्ध परम्परा है। लोग विभिन्न आस्थाओं और त्यौहारों को साथसाथ मिलकर मनाते हैं। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि विभिन्न धर्मों से सम्बद्ध लोगों ने कभी किसी समस्या का सामना नहीं किया। हमें इन समस्याओं पर विचार विमर्श करना चाहिये और उससे संबंधित मुद्दों को सम्बोधित करना चाहिये।

क्रियाकलाप -2

अपने देश में प्रचलित विभिन्न धर्मों को सूचीबद्ध कीजिये। और राष्ट्रीय जनगणना के आँकड़ों से इन धर्म को मानने वाले लोगों का अनुपात ज्ञात कीजिये।

भारतीय संविधान यह स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र रहेगा। लेकिन भारतीय धर्म निरपेक्षता और कहीं स्थित धर्मनिरपेक्षता से इस प्रकार भिन्न है कि सभी धर्मों से समान दूरी बनाये रखने की बजाय यह सभी धर्मों से समान व्यवहार करता है। भारतीय

टिप्पणी

धर्म निरपेक्षता अधार्मिक नहीं है। क्यों, तब, भारत में धार्मिक विरोध है? प्राचीनकाल से जलती आ रही इस साम्प्रदायिकता की आग का क्या कारण हो सकता है? क्या इसकी वजह अज्ञानता है? क्या विभाजन की कपट योजना और राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ इस का कारण हैं? क्या कभी कुछ लोगों के समूह की कुछ छिपी हुयी कार्य योजना रही होंगी और यही लोग समय-समय पर साम्प्रदायिक मुद्दों को उछाल कर लोगों की साम्प्रदायिक भावनाओं को उकसाते रहते हैं? साम्प्रदायिकता की भावना को उकसाने वाले क्या मुद्दे हैं? धर्म परिवर्तन और धर्मान्तरण, अन्य विचारों के प्रति असहिष्णुता, क्षुद्र स्वार्थी लाभ भी ऐसे मामलों के केन्द्र में हो सकते हैं। भावी नागरिको के साथ खुले मन से इन आशंकाओं ओर मुद्दों पर विचार विमर्श किया जाना चाहिये। क्या आप छात्रों से इन मुद्दों पर विचार विमर्श करने के तरीके सोच सकते हैं कि जिससे वे इन मुद्दों पर तर्कपूर्ण और निष्पक्ष स्थिति में रह सकें?

क्रियाकलाप -3

1. राष्ट्रीय अखंडता को मजबूत करने में सहायक आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों की सूची बनाइये।
2. भारत की एकता और अखंडता को कमजोर करने वाली शक्तियों की सूची बनाइये।
3. राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावादेने वाले छात्रों द्वारा विद्यालय में किये जा सकने वाले क्रिया कलापों की सूची बनाइये। क्या राष्ट्रीय पर्वों की इसमें कुछ सहायक भूमिका हो सकती है?
4. सामाजिक विज्ञान के उन विषय वस्तु क्षेत्रों को सूचीबद्ध कीजिये जिनमें राष्ट्रीय एकता और अखंडता का आचरण है।
5. अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और संस्थाओं के संबंध में जानकारी एकत्र कीजिये। आप UNO, UNESCO, UNICEF, WTO, ICJ, WHO, FAO आदि की कार्यप्रणाली और उनकी हाल की गतिविधियों के बारे में सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं।
6. अन्तर्राष्ट्रीय/विश्व दिवसों जैसे UNO दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस आदि की एक सूची बनाइये। पूरे वर्ष के लिये इन दिवसों को विद्यालय में मनाने तथा ध्यान रखने की एक योजना तैयार कीजिये।
7. कल्पना कीजिये कि आपके इलाके में साम्प्रदायिक दंगा भड़क गया है। साम्प्रदायिक भावनाओं पर नियंत्रण पाने के लिये आप और आपके छात्र क्या-क्या क्रिया कलाप कर सकते हैं? सभी संभावनाओं पर विचार कीजिये।

प्रगति जांच-2

1. उन सभी संवैधानिक मूल्यों की सूची बनाइये जिनका सामाजिक विज्ञान द्वारा विद्यार्थियों में बीजारोपण होना चाहिए।

.....

.....

.....

2. किस शिक्षा आयोग ने प्रजातंत्र के लिये प्रशिक्षण के प्रावधानों की सिफारिश की?

.....

.....

.....

3. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा में समान अन्तः कोष संबंधी बाते किस शैक्षिक दस्तावेज में कही गयी है?

.....

.....

.....

4. मानव जाति के कल्याण कार्यों में संलग्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के नाम बताइये।

.....

.....

.....

2.2.5 सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर उपाक्षित परिप्रेक्ष्य का प्रभाव

पुनः कई लोगों विशेष रूप से जो मार्क्सवादी विचार धारा के हैं, समाज और इतिहास में अभिजात वर्ग से असम्बद्ध लोगों की भूमिका की खोज प्रारंभ की इन अन-अभिजात वर्ग के सदस्यों को 'सबअल्टर्न' से संबोधित किया जाता है- सामाजिक रूप से बहिष्कृत और वैश्विक अधिपत्य के विरूद्ध संघर्ष करने वाले परिसीमित और दमित लोगों को सामाजिक और ऐतिहासिक सन्दर्भों में वर्णन करने के लिये 1980 की शुरूआत से इस पद का प्रयोग किया जाता है। इस शब्द का अर्थ निम्न वर्ग, दमित, तथा हीन पद आदि के संदर्भ में लिया जाता है। 'उपाश्रित' परिप्रेक्ष्य अपनी दृष्टि से इतिहास को देखता है तथा ब्रिटिश या राष्ट्रवादी इतिहासकारों द्वारा लिखित पक्षपातपूर्ण इतिहास में सुधार करने का उद्देश्य रखता हैं यह प्रभुत्व-पराधीनता के

टिप्पणी

संबंधों का अध्ययन करने की कोशिश करता है। तीसरी दुनिया के देशों में उपाश्रित विद्यालय के विचारों ने इतिहास, अर्धशास्त्र और सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में बहुत योगदान किया है। उपाश्रित परिप्रेक्ष्य अभिजात वर्ग की उन (अधिपत्य) शक्तियों को प्रत्युन्तर है जो इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष सहित सारा श्रेय ले लेना चाहती हैं किसान आंदोलन जैसे संथाल विद्रोह (1855) चम्पारन सत्याग्रह (1917-18) और बारडोली सत्याग्रह (1928) को सब अल्टर्न द्वारा अपने अधिकारों और माँगों को बलपूर्वक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। मुख्यत: औपनिवेशिक प्रशासन की दमनकारी आर्थिक नीतियों और नई भूमि कर प्रणाली के कारण ये आंदोलन हुए। जब किसान इन नीतियों का पालन करने में असमर्थ हुए तब उन्होंने दमन और शोषण के विरूद्ध विद्रोह कर दिया।

भारत जैसे देश में सब अल्टर्न से संबंधित लोग का जनसंख्या में एक काफी बड़ा भाग है। यदि हमारी जनसंख्या का इतना बड़ा हिस्सा स्वयं को पीछे छूटा हुआ, गौण और दमित महसूस करने के दुष्परिणामों के बारे में सोचिये। क्या आप सोचते है कि ऐसी स्थिति में विकास के मुद्दों के महत्वपूर्ण निहितार्थ होंगे? सामाजिक और राष्ट्रीय प्रक्रिया में यदि सभी घटक संयोजित न हों तो क्या प्रजातंत्र सफल हो सकता है? उपाश्रित परिप्रेक्ष्य ने समाज, विकास और शासन के मुद्दों को देखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने उन घटकों की आवाज कैसे सुनी जाये का परीक्षण करने का भी प्रयास किया हैं अभिजात वर्ग की अधिकारों को पकड़े रहने की अधि पत्य प्रवृत्ति को-नियति नियंत्रण की शक्ति, उपाश्रितो की नियति को उपाश्रित परिप्रेक्ष्य अस्वीकार करता है। उपाश्रितों की माँग है कि इन मुद्दों का परीक्षण उपाश्रितों के दृष्टिकोण से किया जाये। उन्हें अपनी बात कहने दी जाये। यद्यपि परिभाषा के अनुसार सब अल्टर्न वे है जिनकी आवाज मौन है, अब उनके परिप्रेक्ष्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यदि हम उपाश्रित दृष्टिकोण को छोड़देते हैं और छात्रों को इस परिप्रेक्ष्य से संवेदित करने में असफल होते हैं तो हमारी समाज के प्रति समझ अधूरी ही रह जायेगी।

2.2.6 लिंग, जाति, अैर जन जातीय प्ररिप्रेक्ष्य

नीचे दी गई तालिका में सभी व्यक्तियों, महिलाओं और पुरूषों की सभी राज्यों और संघ शासित प्रदेशों की साक्षरता दर का अध्ययन कीजिये।

तालिका 2.1 : भारतीय राज्यों में साक्षरता दर: जनगणना 2011

	राज्य	समस्त व्यक्ति	पुरूष	महिला
1	अंडमान निकोबार द्वीप समूह	86.3%	90.1%	81.8%
2	आन्ध्र प्रदेश	67.7%	75.6%	59.7%
3	अरूणाचल प्रदेश	67%	73.7%	59.6%
4	असम	73.2%	78.8%	67.3%
5	बिहार	63.8%	73.5%	53.3%
6	चंडीगढ़	86.4%	90.5%	81.4%

7	छत्तीसगढ़	71%	81.5%	60.6%
8	दादर नगर हवेली	77.7%	86.5%	65.9%
9	दमन और दीव	87.1%	91.5%	79.6%
10	दिल्ली	86.3%	91.0%	80.9%
11	गोवा	87.4%	92.8%	81.8%
12	गुजरात	79.3%	87.2%	70.7%
13	हरियाणा	76.6%	85.4%	66.8%
14	हिमाचल प्रदेश	83.8%	90.8%	76.6%
15	जम्मू और कश्मीर	68.7%	78.3%	58.0%
16	झारखंड	67.6%	78.5%	56.2%
17	कर्नाटक	75.6%	82.8%	68.1%
18	केरल	93.9%	96.0%	92.0%
19	लक्षद्वीप	92.3%	96.1%	88.2%
20	मध्य प्रदेश	70.6%	80.5%	60.0%
21	महाराष्ट्र	82.9%	89.8%	75.5%
22	मणिपुर	79.8%	86.5%	73.2%
23	मेघालय	75.5%	77.2%	73.8%
24	मिजोरम	91.6%	93.7%	89.4%
25	नागालैण्ड	80.1%	83.3%	76.7%
26	ओड़ीशा (उड़ीसा)	73.5%	82.4%	64.4%
27	पदुच्चेरी	86.5%	92.1%	81.2%
28	पंजाब	76.7%	81.5%	71.3%
29	राजस्थान	67.1%	80.5%	52.7%
30	सिक्किम	82.2%	87.3%	76.4%
31	तमिलनाडु	80.3%	86.8%	73.9%
32	त्रिपुरा	87.8%	92.2%	83.1%
33	उत्तर प्रदेश	69.7%	79.2%	59.3%
34	उत्तराखंड	79.6%	88.3%	70.7%
35	प. बंगाल	77.1%	82.7%	71.2%
	भारत	74.04%	82.14%	65.46%

(स्रोत: भारत की जनगणना, 2011)

टिप्पणी

आपने क्या अवलोकन किया? सभी राज्यों में महिलाओं के साक्षरता आँकड़ों में पुरूषों के साक्षरता आँकड़ों के मुकाबले कमी क्यों है? उन राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों को ढूँढो जिनमें महिलाओं और पुरूषों की साक्षरता में अन्तर बहुत अधिक है, और उन्हे भी जिनमें यह अन्तर बहुत कम है।

हमारी कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग महिलाओं का है। यद्यपि भारतीय समाज में मात् पूजा की परम्परा है, इस देश में महिलाओं से व्यवहार बराबरी से कम है। जनसंख्या जनगणना आँकड़ों का अध्ययन करते हुए आप के ध्यान में यह आना चाहिये कि किसी भी समूह की, चाहें वे सामान्य या अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति की महिलायें, पुरूषों की अपेक्षा कम मात्रा में साक्षर है। आपने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि भारत में लिंगानुपात महिलाओं के विपरीत है, अर्थात् हमारे देश में पुरुषों की अपेक्षा महिलाये कम हैं। भारत में स्त्रियों की राजनैतिक प्रक्रिया में भागीदारी पुरूषों की अपेक्षा कम है। चयनित प्रतिनिधियों में उनकी संख्या नगण्य है, और उनके हिस्से में कम जायदाद हैं भारत में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार और दहेज संबंधी उत्पीड़न सामान्य बात है। यहाँ तक कि हमारे सभ्य नगरों में सड़कें भी उनके लिये बहुत सुरक्षित नहीं हैं। उनके अपने घरों में उनकी सुरक्षा और कल्याण इतना खतरे में है कि इस देश में घरेलू हिंसा के विरोध में एक कानून लागू करना पड़ा। क्या आप सोचते हैं कि कानून से महिलाये आज अधिक सुरक्षित हैं? ये सभी तथ्य किस ओर इशारा करते हैं? स्त्रियों के लिये स्वतंत्रता और उनके सशक्ति करण, समान बर्ताव और सम्मान पर व्याख्यान देना एक बात है, लेकिन इसका वास्तव में सामना होने पर यह एक दम दूसरी बात बन जाती है। भारतीयों का पुलिंग बच्चे के प्रति परंपरागत जुनून, यहाँ तक कि भारतीय माताओं में भी, पैमाने के झुकाव को महिलाओं के बहुत विपरीत ही तो जाता है।

तालिका 2.2: लिंग अनुपात (प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या)
भारत और चुनिंदा प्रदेश

भारत	बिहार	छत्तीस गढ़	झारखंड	ओडीशा	पंजाब	उत्तर प्रदेश	आपका प्रदेश
940	916	991	947	978	893	908	ढूँढ कर लिखें

स्रोत : भारत की जनगणना 2011

विश्व में विकसित राष्ट्र का दर्जा प्राप्त करने की दावेदारी के लिये तैयार देश के आधुनिक उदार प्रजातंत्र के लिये यह एक बुरी स्थिति है। रवैये में बदलाव परिस्थिति की माँग है। ऐसे सामाजिक परिवर्तन लाने के लिये कानून और बल अपर्याप्त साधन हैं। विद्यार्थियों के रवैये में वांछित परिवर्तन लाने में सामाजिक विज्ञान एक विषय के रूप में तथा आप सामाजिक विज्ञान अध्यापक के रूप में बहुत कुछ कर सकते हैं। भारत के भावी नागरिकों को लिंग समानता जैसे मुद्दे पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या द्वारा संवेदित किया जाना चाहिये। भारतीय इतिहास और समाज की कुछ अनुकरणीय महिलाओं की चर्चा कर देना ही पर्याप्त नहीं होगा। यह आवश्यक है, कि महिलाओं के मुद्दों को समाज का जरूरी भाग मानकर सम्पूर्ण समाज की भलाई और उन्नति के लिये उनका योगदान, देश की अर्थव्यवस्था में उनकी सहभागिता और उनके सम्पत्ति, समानता, गरिमा और सम्मान के अधिकार पर ध्यान दिया जाये। बालिका शिक्षा एक महत्वपूर्ण

मुद्दा है। स्वतंत्रता के पश्चात् महिला साक्षरता बढ़ रही है और आज अधिक लड़कियां विद्यालयों में पढ़ने जा रही हैं। गुणवत्ता पूर्ण समेकित शिक्षा की व्यवस्था कर लिंग समानता के क्षेत्र में लड़कियों के लिये अभी काफी कुछ और भी किया जा सकता है।

भारत में पिछड़ी जातियाँ बहुत से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक प्राधिकारों से वंचित रही हैं। जातीय पदानुक्रम में सबसे नीचे होने के कारण उन्होंने गरीबी, अपमान और शोषण को सहा है। भारतीय समाज की समकालीन संरचना ने दीर्घकाल तक पिछड़ी जातियों का दमन किया है। पिछड़ी जातियों को उनकी तार्किक और विवेचनात्मक सोच और विचारधारा का प्रयोग कर ऊपर उठने की चेष्टाओं को शक्ति प्रदान करना, आज समय की माँग बन चुकी है। यह आवश्यक है कि पिछड़ी जातियाँ नेतृत्व, कार्यक्षेत्र, राजनीति में प्रवेश के लिये आवश्यक गुणों एवं क्षमताओं का अपने भीतर विकास करें। पिछड़ी जातियों को ऐसी आत्म-सम्मान और आदरणीय जीवन शैली की अभिलाषा का भी बीजारोपण करना चाहिये जिसमें पारम्परिक रिवाजों का कोई स्थान न हो। ये सभी कार्य और प्रगति नीचे से होनी चाहिये-पिछड़ी जाति के लोगों के लिये यह रूपान्तरण की प्रक्रिया सार्थक होनी चाहिये। हजारों वर्षों के भेदभाव और दमन का अतिक्रमण करने की चेतना और सामर्थ्य को निर्मित करने में शिक्षा एक बहुत महत्वपूर्ण साधन है। ''अनुसूचित जाति का शैक्षिक विकास गैर-अनुसूचित जातीय वर्ग की शिक्षा के सभी चरणों और स्तरों, सभी क्षेत्रों और सभी चारों दिशाओं-ग्रामीण पुरूष, ग्रामीण महिला, नगरीय पुरूष और नगरीय महिला, में बराबरी का होना चाहिये।'' (रा. शि.नी., 1986)

तालिका 2.3: अनु.जा. और ज.जा. जनसंख्या की चुनिंदा प्रदेशों में साक्षरता

राज्य	अनुसूचित जाति		जनजाति	
	सभी व्यक्ति	महिलायें	सभी व्यक्ति	महिलायें
बिहार	28.5	15.6	28.2	15.5
छत्तीसगढ़	64.0	49.2	52.1	39.3
झारखंड	37.6	22.5	40.7	27.2
ओडीशा	55.5	40.3	37.4	23.4
उत्तर प्रदेश	46.3	30.5	35.1	20.7
भारत	54.69			

(स्रोत: भारत की जनगणना, 2001)

सामाजिक परिवर्तन की क्रान्ति को आगे ले जाने के लिये शिक्षा एक प्रबल हथियार है। शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कर पिछड़ी जाति के बालकों को सदियों पुराने सामाजिक, आर्थिक बाधाओं को तोड़ने की आवश्यकता है। शिक्षा को मानसिक जागरण, सामाजिक और नैतिक अंतरात्मा सृजक होना चाहिये। शिक्षा हीन सामाजिक और मानसिक स्थिति से उबरने का एक साधन भी है। पाठ्यचर्या को संस्कृति, भाषा और इन लोगों के ज्ञान के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। पिछड़ी जाति के छात्र को यह अवसर मिला चाहिये कि वह विद्यालय में पढ़े गयी पाठ्यवस्तु का संबंध अपने पड़ौस और संस्कृति से स्थापित कर सके। अन्यथा, वह

टिप्पणी

अपने मन में अलगाव और हीनता के सूक्ष्म भाव का विकास करने के लिये बाध्य हो जायेगा यदि वह उसे अस्वीकार करता है जो उस का है तो वह दमनकारी समूह द्वारा दिए गए निम्न स्तरीय भावों को स्वीकार करने को विवश होगा।

अनुसूचित जनजातियाँ भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग हैं। परम्परानुसार, उन्होंने अपनी भाषा और भिन्न संस्कृति के साथ अपना स्वतंत्र जीवन जीया है। अधिकांश जनजातियों की अपनी भाषा है, यद्यपि वह केवल मौखिक बोली के रूप में ही है। उनकी अपनी रीतियाँ परम्परायें और मूल्य, व्यवस्थायें हैं। जनजातियों की ज्ञान की निजी रूपरेखायें है। उनका प्रकृति का ज्ञान उन्हें अपने आप में अनुपम बना देता है, वे प्रकृति के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध में जीवन जीते हैं, और उनकी प्राकृतिक शक्तियों के साथ समरसता है। वे अपनी जीवन शैली और गरिमा का बचाव करने वाले गौरववान लोग हैं। उनमें से बहुतों ने अपनी संस्कृति और भूमि की रक्षा के लिये ब्रिटिश लोगों से युद्ध किया, 1855 का संथाल विद्रोह और बिरसा मुंडा के नेतृत्व में क्रान्ति इसके कुछ उदाहरण हैं।

जनजातियाँ प्राय: दुरूह क्षेत्रों और पहाड़ी क्षेत्रों में रहती हैं, उन में से अधिकांश आजकल के औद्योगिक और राजनैतिक केन्द्र से दूर हैं, जो उन्हें स्पष्ट रूप से अलाभकारी स्थिति में पहुँचा देता हैं। उन की पृथक भाषायें उनके बच्चों पर अतिरिक्त बोझ बन जाती हैं जो बच्चे दूसरी भाषाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं, प्राय: वे भाषायें उन के लिये विदेशी होती हैं। यह वास्तविकता है कि उनकी संस्कृति और परम्पराओं का विद्यालय में प्रदर्शन यदा-कदा होता है। पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकें जनजातीय छात्रों की समस्या को और बढ़ा देती हैं, जो विद्यालय में सीखे गये ज्ञान को अपने पर्यावरण के साथ नहीं जोड़ सकता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का कथन है: ''पाठ्यक्रम शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर जनजातीय लोगों की समृद्ध सांस्कृतिक पहचान और विपुल सृजनात्मक प्रतिभा के प्रति चेतना निर्माण की रचना करेगा। जनजातीय परिप्रेक्ष्य से इतिहास, संस्कृति, पर्यावरण और विकास की चर्चा करने के लिये सामाजिक विज्ञान सर्वाधिक उपयुक्त विषय है।

क्रियाकलाप-4

1. अपने राज्य और भारत का लिंग अनुपात (प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या) जनगणना आँकड़ों से ज्ञात कीजिये।
2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, और सामान्य वर्ग की साक्षरता दर की तुलना कीजिये। स्त्रियों की साक्षरता दर की तुलना सामान्य वर्ग, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में कीजिये। आपने क्या अवलोकन किया? आप किस समूह को शैक्षिक रूप से पिछड़ा हुआ मानेंगे सभी समूहों में से किस एक समूह को आप शैक्षिक दृष्टि से अति पिछड़ा समूह कहेंगे?
3. पता कीजिये किस राज्य में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों की जनसंख्या सर्वाधिक है? उन राज्यों जिन में अनुसूचित जाति और जनजाति को जनसंख्या अधिक है की आर्थिक और विकास परिस्थितियों की तुलना अन्य राज्यों से किये जाने

पर आप क्या पाते हैं? आप अपने अध्ययन से क्या निष्कर्ष निकालते हैं? अपने निष्कर्ष लिखिये और इनकी चर्चा अपने विद्यार्थियों और सहकर्मियों से कीजिये।

4. जनगणना आंकड़ों के अपने अध्ययन के आधार पर सबसे कमजोर समूह की पहचान कीजिये।

प्रगति जाँच-3

1. उपाश्रित कौन हैं?

.....

.....

.....

2. इतिहाससे एक उपाश्रित आंदोलन का नाम बताइये?

.....

.....

.....

3. साक्षरता दर को ध्यान में रख कर किस समूह को सर्वाधिक पिछड़ा समूह कहेंगे?

.....

.....

.....

2.2.7 सामाजिक विज्ञान पर अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

हम वैश्वीकरण के युग में जी रहे हैं। वर्तमान युग में दुनिया के देश और उनके लोग परस्पर संबद्ध और निर्भर हैं। सुधरी हुयी यातायात व्यवस्था और सम्प्रेषण ने दुनिया के लोगों और स्थानों को निकट ला दिया है। कई चुनौतियाँ जिनका सामना आज लोग और समाज कर रहे हैं अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति की हैं। उदाहरण के लिये पर्यावरण की समस्या का सामना दुनिया भर के लोगों द्वारा किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण और प्राकृतिक संसाधनों का बुद्धिमत्ता पूर्ण प्रयोग सभी लोगों और समाजों का कार्य बन गया है। अन्य कई मुद्दे जिन में सम्पूर्ण मानव जाति के निहितार्थ हैं- व्यापार और वाणिज्य, विश्व शान्ति, राष्ट्रों के मध्य विवादों और सशस्त्र संघर्ष पर नियंत्रण, आतंकवाद, बड़े पैमाने पर होने वाली प्राकृतिक आपदायें जैसे सुनामी आदि हैं। इन सभी वैश्विक मुद्दों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक बनाने का उत्तरदायित्व अब सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या का ही है।

टिप्पणी

आधुनिक युग में मानव विकास, जीवन की गुणवत्ता और मानवाधिकार भी वैश्विक निहितार्थ अर्जित कर चुके हैं। विश्व के एक भाग में विकास होने पर अन्य भाग प्रभावित होते हैं। विश्व के किसी भी भाग में रहने वाले लोगों से विश्व नागरिक के सरोकार हैं। इसके अतिरिक्त कई मानवीय मूल्य जैसे समानता, स्वतंत्रता, न्याय, लिंग और नस्लीय समानता किसी एक समाज तक ही सीमित नहीं हैं। लगभग सभी समाजों को इन मुद्दों पर ध्यान देना होता है। विभिन्न देशों के सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्याओं में इनकी झलक दिखती है।

हमें परीक्षण करना चाहिये कि दुनिया के अन्य देशों की पाठ्यचर्याओं में क्या चल रहा है? अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों के सामाजिक विज्ञान पर प्रभाव को समझने के लिये हमें दक्षिण अफ्रीका का उदाहरण लेना चाहिये।

दक्षिण अफ्रीका की संशोधित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ने आठ मुख्य क्षेत्रों में से एक सामाजिक विज्ञान को सम्मिलित किया है। लोगों के बीच परस्पर संबंधों पर्यावरण और लोगों के बीच संबंधों का जो कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और पर्यावरण संबंधी संदर्भ और लोगों के व्यवहारों, मूल्यों और आस्थाओं से प्रभावित होने वाले संबंध सामाजिक विज्ञान के अधिगम क्षेत्र हैं। संकल्पनाये, कौशल, इतिहास और भूगोल की प्रक्रियायें, पर्यावरण शिक्षा और मानवाधिकार शिक्षा इस क्षेत्र के आवश्यक अंग हैं। विद्यार्थी क्या सीखते हैं और वे कैसे सीखते और ज्ञान निर्माण करते हैं दोनों से सामाजिक विज्ञान अधिगम क्षेत्र के सरोकार हैं। विद्यार्थियों को अपने पर्यावरण और समाज से संबंधित प्रश्नों को पूछने और उनके उत्तर ढूँढने के लिये प्रोत्साहित किया जाता हैं। इस अधिगम क्षेत्र से यह आशा की जाती है कि वह जानकार, तार्किक और जिम्मेदार (उत्तरदायी) नागरिकों का विकास करे, जो भिन्न संस्कृति वाले परविर्तनशील समाज में रचनात्मक रूप से भाग ले सकें। न्यायोचित और प्रजातांत्रिक समाज के विकास में सहयोग की अपेक्षा भी विद्यार्थियों से की जाती है। आर्थिक असमानताओं (नस्ल और लिंग भेद सहित) को चुनौती देने और उनका सामाना करने में देश का भविष्य किस प्रकार प्रभावित हो सकता है, के लक्ष्य को भी पाठ्यक्रम निर्धारित करता है।

इतिहास में वर्तमान और भूतकाल का अनुसंधान, भूगोल में मुख्य प्रक्रियायें, लोगों के बीच के परस्पर संबंधों, पर्यावरण और संसाधन; ऐतिहासिक व्याख्यान कौशल; स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक मापदंडों पर विकास के विषयों पर विवेचनात्मक विश्लेषण; संवैधानिक मूल्यों पर आधारित; मानवाधिकार और पर्यावरण संबंधी विषयों के परीक्षण कौशल को सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के अवयवों में सम्मिलित किया गया है।

विद्यार्थियों से नस्ल, लिंग, वर्ग, विदेशी-द्वेष, नर संहार और इनके भूतकाल और वर्तमान में हुए प्रभाव जैसे विभिन्न विषयों पर खोज कार्य की अपेक्षा इस पाठयक्रम द्वारा की जाती है। प्राकृतिक संसाधनों का वितरण तथा उन तक पहुँच, राजनैतिक शक्तियों के कार्यों, लिंगीय संबंधों, और लोगों के जीवन पर इनका भूतकाल और वर्तमान में जारी प्रभाव सहित, भूत और वर्तमान के शक्ति संबंधों के निरीक्षण को पाठ्यचर्या महत्वपूर्ण मानती है। यह आवश्यक है कि दक्षिण अफ्रीकी और विश्व के नागरिक जिन सामाजिक, नैतिक, आर्थिक और नीति परक मुद्दों का सामना कर रहे हैं उन के प्रति छात्र भी जागरूक हों।

टिप्पणी

2.2.8 राष्ट्र स्तरीय सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में वर्तमान विचारधारा और व्यवहार

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम योजना (2005), सामाजिक विज्ञान के लिये विस्तृत योजना का निर्माण करता है। सामाजिक विज्ञान समाज की विविध अभिरूचियों इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र और मानव शास्त्र से ली गई विस्तृत विषय वस्तु को सम्मिलित करता है। पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की जागरूकता, तार्किक अन्वेषण और परिचित समाजिक वास्तविकताओं संबंधी प्रश्न पूछकर बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित करता है विद्यार्थियों की विश्व में बढ़ती हुयी पारस्परिक निर्भरता के साथ सामंजस्य बनाने में आवश्यक सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण करने और राजनैतिक तथा आर्थिक यर्थाथताओं का सामना करने, का कौशल प्रदान करने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम योजना (2005) के अनुसार, सामाजिक विज्ञान का यह उत्तरदायित्व है कि ''विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, विश्वास, पारस्परिक आदर के प्रति एक प्रभावशाली समझ का निर्माण करे और उनमें विवेचनात्मक नैतिक और मानसिक ऊर्जा का निर्माण कर उन्हें ऐसी सामाजिक शक्तियाँ जो इन मूल्यों के लिये खतरा हैं के प्रति सावधान बनाये।''

सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या ने अभी तक विकास के विषयों पर ही बल दिया है। राष्ट्रीय पा. यो में लिखा है ''ये महत्वपूर्ण हैं किन्तु मानदंड संबंधी आयाम जैसे समानता, न्याय, सामाजिक प्रतिष्ठा और राजव्यवस्था को समझने के लिये पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार के विकास में (व्यक्तिगत) सहयोग की भूमिका पर प्रायः अत्याधिक बल दिया जाता रहा है।''

''नागरिक शास्त्र के बदले, राजनीति विज्ञान के प्रयोग का सुझाव दिया जाता है। औपनिवेशिक काल में विद्यालयी पाठ्यक्रम में नागरिक शास्त्र, भारत में ब्रिटिश राज के प्रति बढ़ते हुए 'अविश्वास' के विरोधी के रूप में किया जाता था। आज्ञाकारिता और स्वामी भक्ति पर जोर देना नागरिक शास्त्र के प्रमुख गुण थे। राजनीति विज्ञान सभ्य समाज से एक ऐसे मंडल की तरह व्यवहार करता है जो संवेदनशील, जिज्ञासु, विचारवान और परिवर्तनशील नागरिकों का उत्पादन करता है।'' (रा.पा.यो. 2005)

सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ स्थानीय परिप्रेक्ष्य में और विश्व के अन्य भागों में हुए विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय इतिहास शिक्षण में संतुलन स्थापन की आवश्यकता महसूस की गई। इससे स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक परिस्थितियों और अवधारणाओं का विस्तृत परिदृश्य निर्मित होगा। पाठ्यक्रम को अब, भारतीय समाज और इसके लोगों की वर्तमान समस्याओं और मुद्दों जैसे मानवाधिकार, पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख की समस्या, राष्ट्रीय अखंडता, गरीबी, निरक्षरता, बालश्रम और बंधुआ मजदूरी, बहुलता और परिवर्तन, लिंग, वर्ग और जाति की निष्पक्ष प्रतिभागिता आदि का सामना करना होगा। बालकों के स्वास्थ्य संबंधी सरोकारों और किशोरावस्था में होने वाले सामाजिक परिवर्तन और विकास जैसे अभिभावको के साथ संबंध हम उम्र सदस्यों का समूह, विपरीत लिंग और वयस्क संसार को भी संबोधित किये जाने की आवश्यकता है। वैश्विक प्रतियोगिता की चुनौतियों के अनुरूप मानक निर्धारित करना पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

उच्च प्राथमिक अवस्था पर, ''भारत के विभिन्न भागों और विश्व के अन्य भागों में हुए विकास या घटनाओं का वर्गीकृत विवरण इतिहास रखेगा। स्थानीय से वैश्विक पर्यावरण और संसाधनों के विभिन्न स्तरीय विकास संबंधी सरोकारों के मुद्दों पर संतुलित परिप्रेक्ष्य के विकास में भूगोल सहायक हो सकता है। राजनीति विज्ञान में विद्यार्थियों का स्थानीय, प्रादेशिक और केन्द्रीय स्तर की शासन प्रक्रिया और गठन और प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं में प्रतिभागिता से परिचय होगा। अर्धशास्त्र के अवयव विद्यार्थियों को आर्थिक संस्थानों जैसे परिवार, बाजार, और प्रदेश अवलोकन करने की योग्यता प्रदान करेंगे। एक वर्ग ऐसा भी होगा जो इन विषयों को बहुविषयी प्रस्ताव के रूप में इंगित करेगा।'' (रा.पा.यो., 2005)

वर्तमान पाठ्यक्रम पुस्तकों के प्रति केवल शिक्षाप्रद, होने की धारणा को, अधिक प्रस्तावित, में परिवर्तित करने का प्रयास करता है। विद्यार्थियों को पारस्परिक प्रभावशाली वातावरण में ज्ञान और कौशल के अर्जन के लिये शिक्षण अधिगम विधियों को पुनर्जीवित किये जाने की आवश्यकता है। सामाजिक विज्ञान को उन विधियों को ग्रहण करना चाहिये जो सृजनात्मकता, सौन्दर्यबोध और सूक्ष्म परिदृश्यों और बालकों को भूत और वर्तमान के बीच संबंध स्थापित करने के योग्य बनाने में, समाज में आने वाले परिवर्तनों को समझने में सहायक हों। अब तक की सबसे कम उद्धभासित योजनाओं समस्या समाधान, नाट्य रूपान्तरण और भूमिका निर्वहन को क्रियान्वित किया जासकता है। शिक्षण में दृश्य-श्रव्य संसाधनों, चित्रों, लेखा चित्रों, और मानचित्रों सहित पुरातात्विक भौतिक सांस्कृतिक सामग्रियों का अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिये। अधिगम प्रक्रियाओं को और अधिक सहभागिता वाला बनाने के लिये, वादविवाद और परिचर्चा को, केवल सूचना प्रदान करने वाली विधियों के स्थान पर प्रयोग किया जाना चाहिये। इस प्रस्ताव से अधिगम क्रियाओं में विद्यार्थियों और शिक्षक की सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति जीवंत रहने की आशा की गई है। इस प्रस्ताव के लिये उन्मुक्त शिक्षण आवश्यक है। अध्यापक को कक्षा में सामाजिक वास्तविकताओं के विभिन्न आयामों पर चर्चा करनी चाहिये और विद्यार्थियों के साथ मिलकर उन की बढ़ती हुयी आत्म चेतना के निर्माण के लिये कार्य करना चाहिये।

क्रियाकलाप-5

1. दक्षिणी अफ्रीका और भारत के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रमों के बीच समानताओं को लिखिये और दोनों देशों में समान तत्वों और मुद्दों का पता लगाइये?
2. भारत के पाठ्यक्रम में आप जिन सरोकारो और विषयों को सम्मिलित करना चाहते हैं, को सूचीबद्ध कीजिये।
3. भारत में सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के लिये कौन-2 से नवीन शिक्षण अधिगम प्रस्ताव हो सकते हैं?

प्रगति जाँच-4

1. अधिकांश देशों के लिये समान कुछ मुद्दों (विषयों) की सूची निर्मित कीजिये।

.....

.....

.....

2. दक्षिण अफ्रीकी सामाजिक विज्ञान अधिगम क्षेत्र का क्या अध्ययन है?

.....

.....

.....

3. एनसीएफ, 2005 द्वारा ने नागरिक शास्त्र के स्थान पर किस नाम को प्रस्तावित किया है?

.....

.....

.....

4. एनसीएफ 2005 के अनुसार, पाठ्य पुस्तकों की धारणा को वर्तमान पाठ्यक्रम परिवर्तित करने का प्रयास करता है। किन परिवर्तनों का प्रस्ताव दिया गया है?

.....

.....

.....

2.3 सारांश

बीते समय में हुए बहुत से विकासों और प्रभावों ने विषय वस्तु में सहयोग कर सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में वृद्धि और रूपान्तरण किया है। औपनिवेशिक काल में सामाजिक विज्ञान को एक विषय के रूप में प्रारंभ किया गया था, और इस अवधि में कई विकासों ने इस के पाठ्यक्रम को प्रभावित किया। भारत का इतिहास लेखन, भारतीय उपमहाद्वीप का सर्वेक्षण, भारत की जनसंख्या की जनगणना, अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था का प्रारंभ आदि इसी अवधि में हुए विकास का सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या पर गहरा प्रभाव हैं। भारतीय संस्कृति, इतिहास और समाज में नकारात्मक तत्वों के और यूरोपियन संस्कृति की श्रेष्ठता के अतिरंजन द्वारा ब्रिटिश लोगों ने भारत

टिप्पणी

में अपने शासन को सभ्य शक्ति के रूप में न्यायोचित बताने का प्रयास किया। ब्रिटिश लोगों द्वारा तैयार की गई विषय वस्तु के विकल्प में औपनिवेशिक शासन काल में भारत में व्याप्त राष्ट्रवादी भावनाओं से प्रेरित विषय वस्तु का प्रस्ताव दिया और सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय संविधान में नये मूल्यों और महत्वकांक्षाओं को झलक मिली। नवीन सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, उदारता, समानता, न्याय और बन्धुत्व जैसे मूल्यों को अभिव्यक्ति मिली। नवीन सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या ने कुछ मुद्दों जैसे विविधता, राष्ट्रीय अखंडता, अन्तर्राष्ट्रीय समझ, पर्यावरण और विकास आदि पर भी ध्यान दिया। सब उपाश्रयों, लिंग, जाति और जनजाति परिप्रेक्ष्यों ने भारतीय समाज को प्रभावित किया। इन मुद्दों से भी सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम प्रभावित हुआ। दक्षिण अफ्रीका का सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम हमें अन्य देशों में चल रहे सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रमों में क्या चल रहा है, की समझ प्रदान करता हैं। दो बहुवादी राष्ट्रों के सामाजिक सरोकार कितने समान हैं और दोनों देशों के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में ये सरोकार किस प्रकार स्थान पाते हैं, देखना दिलचस्प है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में आधुनिक राष्ट्रीय विचारधारा ऐसी पाठ्यचर्या की माँग करती है जो नाजुक सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों को नई प्रस्तावित शिक्षण अधिगम विधियों के साथ छात्रों को हमारे समाज के प्रति उन के ज्ञान और समझ के निर्माण पर जोर डाले।

2.4 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

1. जेम्स मिल
2. जेम्स प्रिंसेप
3. अन्वेषण और देश का परिसीमन
4. बड़ौदा के महाराजा सियाजी राव गायकवाड़

प्रगति जाँच-2

1. प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, उदारता, समानता, न्याय अैर बंधुत्व।
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1948-49
3. राष्ट्रीय शिक्षानीति 1986
4. UNO, UNESCO, UNICEF, आदि

प्रगति जाँच-3

1. उपाश्रित का तात्पर्य दमित और गौण लोगों से है।

2. संथाल विद्रोह (1855)/चम्पारन सत्याग्रह (1917-18)/बारडोली सत्याग्रह (1928)

3. जनजातीय महिलायें

प्रगति जाँच-4

1. पर्यावरण, व्यापार और वाणिज्य, मानव अधिकार, समानता आदि

2. सामाजिक विज्ञान अधिगम क्षेत्र सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और पर्यावरण से संबंधित प्रसंगों और लोगों के व्यवहारों, मूल्यों और आस्थाओं से प्रभावित होने वाले लोगों के परस्पर और पर्यावरण से संबंधों का अध्ययन करता है।

3. राजनीति विज्ञान

4. पाठ्य पुस्तकों को केवल शिक्षा प्रदान करने वाली से परिवर्तित होकर अधिक प्रस्तावित होना चाहिये।

2.5 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शिक्षा विभाग, प्रिटोरिया, दक्षिण अफ्रीका (2002), संशोधित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम वक्तव्य ग्रेड्स R-9 (विद्यालय), सामाजिक विज्ञान
- उनकी पूर्वी और पाश्चात्य शिक्षायें (2000) स्वामी विवेकानंद का जीवन, खंड-2 (कलकत्ता: अद्वैत आश्रम)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986
- एनसीई आर टी (2005), राष्ट्रीय पाठ्यक्रम योजना 2005, नई दिल्ली:एनसीईआरटी
- सेनेविरत्ना, अनुराधा (1994), किंग आशोक एंड बुद्धिज्म, श्रीलंका:बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसाइटी
- http://asi.nic.in/asi_aboutus_histary.asp
- http://www.nlm.nic.in/literacy01_nlm.htm
- http://www.censusindia.gov.in

2.6 अन्त्य इकाई अभ्यास

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

प्रश्न 1 - सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले औपनिवेशिक अवधि के अन्तर्गत हुए विभिन्न विकासों की चर्चा कीजिये।

टिप्पणी

प्रश्न 2 – सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में सम्मिलित विभिन्न संवैधानिक मूल्यों और आदर्शों का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

प्रश्न 3 – आप उपाश्रित परिप्रेक्ष्य को महत्वपूर्ण क्यों समझते/मानते हैं?

प्रश्न 4 – भारत में महिलाओं की क्या स्थिति है? सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में लिंग संबंधी कौन से मुद्दों की चर्चा होनी चाहिये?

प्रश्न 5 – जन जातीय समाजों की संस्कृति का संरक्षण करते हुए क्या उन का रूपांतरण संभव है?

प्रश्न 6 – सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय अखंडता और अन्तर्राष्ट्रीय समझ के क्या निहितार्थ हैं?

प्रश्न 7 – दक्षिण अफ्रीका के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम किन मूल्यों और मुद्दों को महत्वपूर्ण समझा गया है? क्या इन मूल्यों और मुद्दों का भारत के संदर्भ में कोई अर्थ है?

प्रश्न 8 – भारत में सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम द्वारा किन मूल्यों के बीजारोपण का प्रयास किया जाना चाहिए?

प्रश्न 9 – भारत में सामाजिक विज्ञान में नई शिक्षण अधिगम विधियों का वर्णन कीजिये।